CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि० ११

सहजानन्द शास्त्रमाला

जीवस्थानचर्चा

रचयिता—

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु०
मनोहरजी वर्णी सहजानन्द महाराज

142

प्रकाशक—
खेमचन्द जैन, सर्राफ
(मंत्री श्री सहजानन्द शास्त्रमाला)
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ (उ० प्र०)

मुद्रक—
महेश चन्द जैन, वर्द्धमान इलैक्ट्रिक प्रेस,
अस्पताल रोड, आगरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या हि॰ ११ प्राप्ति-संख्या

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम जीवस्थान-चर्चा

लेखक मनोहर वर्णी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहजानन्द शास्त्रमाला

१४२

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

(अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहरजी वर्णी सहजानन्द महाराज द्वारा विरचित)

लघु जीवस्थानचर्चा

जीवस्थानचर्चामें से संक्षिप्त किये गये २६ स्थान—

(१) गुणस्थान १४, (२) जीवसमास १४,
(३) पर्याप्ति ६, (४) प्राण १०, (५) संज्ञा ४।
(६) गति मार्गणा ५ (४+१)
(७) इन्द्रियजातिमार्गणा ६ (५+१)
(८) कायमार्गणा ७ (६+१)
(९) योगमार्गणा १६ (१५+१)
(१०) वेदमार्गणा ४ (३+१)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११) कषायमार्गणा २६ (२५+१)
(१२) ज्ञानमार्गणा ८ (५+३)
(१३) संयममार्गणा ८ (५+१+१+१)
(१४) दर्शनमार्गणा ४
(१५) लेश्यामार्गणा ७ (६+१)
(१६) भव्यत्वमार्गणा ३ (२+१)
(१७) सम्यक्त्वमार्गणा ६ (३+१+१+१)
(१८) संज्ञित्वमार्गणा ३ (२+१)
(१९) आहारकमार्गणा २

(२०) उपयोग २, (२१) ध्यान १६, (२२) आस्रव ५७, (२३) भाव ५३, (२४) अवगाहना, (२५) जाति ८४ लाख, (२६) कुल १९७॥ लाख कोटि ।

गुणस्थान

गुणस्थान—मोह व योगके निमित्तसे होनेवाली आत्मा के सम्यक्त्व और चरित्र गुणोंकी अवस्थाओंको गुणस्थान कहते हैं । गुणस्थान १४ होते हैं—

१ मिथ्यात्व, २ सासादनसम्यक्त्व, ३ मिश्रसम्यक्त्व, (सम्यग्मिथ्यात्व), ४ अविरत सम्यक्त्व, ५ देशविरत,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत ८ अपूर्वकरण (उपशमक व क्षपक), ९ अनिवृत्तिकरण (उपशमक व क्षपक), १० सूक्ष्मसाम्पराय, (उपशमक व क्षपक), ११ उपशान्त मोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगकेवली, १४ अयोग केवली।

(१) मिथ्यात्व—मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत जीवादि ७ तत्त्वोंमें यथार्थ श्रद्धान न होनेको मिथ्यात्व कहते हैं। मिथ्यात्वमें जीव देहको आत्मा मानता है तथा अन्य भी परपदार्थोंको अपना मानता है कषाय परिणामोंसे भिन्न ज्ञानमात्र आत्माका अनुभव नहीं कर सकता है।

(२) सासादनसम्यक्त्व—उपशमसम्यक्त्व नष्ट हो जानेपर मिथ्यात्वका उदय न आ पाने तक अनंतानुबन्धी कषायके उदयसे जो अयथार्थ भाव रहता है उसे सासादनसम्यक्त्व कहते हैं।

(३) सम्यग्मिथ्यात्व—जहाँ ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्वरूप हो और न केवल मिथ्यात्वरूप हो, किन्तु मिला हुआ हो उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

(४) अविरतसम्यक्त्व—जहाँ सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया हो, किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो उसे अविरतसम्यक्त्व कहते हैं। इस गुणस्थानमें उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिक-सम्यक्त्व ये तीनों प्रकारके सम्यक्त्व हो सकते हैं।

(५) देशविरत—जहां सम्यग्दर्शन भी प्रकट हो गया हो और संयमासंयम भी होगया हो उसे देशविरत कहते हैं।

(६) प्रमत्तविरत—जहाँ महाव्रतका भी धारण हो चुका हो, किन्तु संज्वलन कषायका उदय मंद न होनेसे प्रमाद होवह प्रमत्तविरत है।

(७) अप्रमत्तविरत—जहाँ संज्वलनकषायका उदय मंद होनेसे प्रमाद नहीं रहा उसे अप्रमत्तविरत कहते हैं। इसके दो भेद हैं १ स्वस्थान अप्रमत्तविरत, २ सातिशय अप्रमत्त-विरत। स्वस्थान अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं जो श्रेणिमें नहीं चढ़ सकेंगे तथा सातिशय अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं, जो श्रेणिमें याने अष्टम गुणस्थानमें चढ़ जावेंगे किन्तु अभी सातवें गुणस्थानमें हैं। स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थानमें पहुँचते हैं और इस प्रकार छटेसे सातवें में, सातवें से छठे में परिणाम आते जाते रहते हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सतिशय अप्रमत्तविरत्त मुनिके अधःकरण परिणाम होते हैं। वे यदि चारित्रमोहनीयका उपशम प्रारम्भ करते हैं तो उपशमश्रेणि चढ़ते हैं और यदि क्षय प्रारम्भ करते हैं तो क्षपकश्रेणि चढ़ते हैं। सो वे दोनों (उपशम या क्षपकश्रेणि चढ़नेवाले मुनि) आठवें गुणस्थानमें पहुँचते हैं।

सतिशय अप्रमत्तविरत मुनिके परिणामका नाम अधः-करण इसलिये है कि इसके कालमें विविक्षित समयवर्ती मुनिके परिणामके सदृश कुछ पूर्व उत्तरसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम हो सकते हैं।

(८) अपूर्वकरण—इस गुणस्थानमें अगले-अगले समयमें अपूर्व-अपूर्व परिणाम होते हैं, ये उपशमक व क्षपक दोनों तरह के होते हैं। इस परिणामका अपूर्वकरण नाम इस-लिये भी है कि इसके कालमें समानसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम सदृश भी हो जाँय, किन्तु विविक्षित समयसे भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियोंके परिणाम विस-दृश ही होंगे।

इस गुणस्थानमें (१) प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, (२) कर्मोंकी स्थितिका घात होने लगता, (३)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थितिबंध कम हो जाते हैं, (४) बहुतसा अनुभाग नष्ट हो जाता है, (५) असंख्यातगुणी प्रदेशनिर्जरा होती है, और (६) अनेक अशुभप्रकृतियाँ शुभमें बदल जाती हैं।

(९) अनिवृत्तिकरण—इस गुणस्थानमें चढ़ते हुये अधिक विशुद्ध परिणाम होते हैं, ये उपशमक क्षपक दोनों प्रकारके होते हैं। इस परिणामका अनिवृत्तिकरण नाम इसलिये है कि इसके कालमें विविक्षित समयमें जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा। यहाँ भी भिन्न समय वालोंके परिणाम विसदृश ही होंगे। इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीयकी २० प्रकृतियोंका (अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, संज्वलन ३ हास्यादि ९) उपशम या क्षय हो जाता है।

(१०) सूक्ष्मसाम्पराय—नवमें गुणस्थानमें होनेवाले उपशम या क्षयके बाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्मलोभ रह जाता है, ऐसा जीव सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती कहा जाता है, इस गुणस्थानमें सूक्ष्मसाम्परायचारित्र होता है जिसके द्वारा अन्तमें इस गुणस्थानवाला जीव सूक्ष्म लोभका भी उपशम या क्षय कर देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११) उपशान्तमोह—समस्त मोहनीय कर्मका उपशम हो चुकते ही जीव उपशान्तमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है, इस गुणस्थानमें यथाख्यातचारित्र हो जाता है, किन्तु उपशमका काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थानमें गिरना पड़ता है या मरण हो तो चौथे गुणस्थानमें एकदम आना पड़ता है।

(१२) क्षीणमोह—क्षपकश्रेणिसे चढ़ने वाला मुनि ही समस्त मोहनीयके क्षय होते ही क्षीणमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है। इस गुणस्थानमें यथाख्यातचारित्र हो जाता है तथा इसके अन्त सयममें ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायकर्मका भी क्षय होजाता है। (क्षपकश्रेणिसे चढ़ने वाला मुनि ग्यारहवें गुणस्थानमें नहीं जाता है, वह दसवें गुणस्थानसे बारहवें गुणस्थानमें आजाता है)।

(१३) सयोगकेवली—चारों घातिया कर्मके नष्ट होते ही यह आत्मा सकल परमात्मा हो जाता है। इन केवली भगवानके जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोगकेवली कहते हैं। इनके बिहार भी होता है, दिव्यध्वनि भी खिरती है। तीर्थङ्कर सयोगकेवलीके समवशरणकी रचना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होती है, सामान्य सयोगकेवलीके गन्धकुटीकी रचना होती है। इन सबका नाम अर्हन्त परमेष्ठी भी है। अन्तिम अन्त-मुर्हुर्तमें इनके बादर योग नष्ट होकर सूक्ष्म योग रह जाता है और अन्तिमसमयमें यह सूक्ष्म योग भी नष्ट हो जाता है।

(१४) अयोगकेवली—योगके नष्ट होते ही ये परमात्मा अयोगकेवली हो जाते हैं। शरीरके क्षेत्रमें रहते हुए भी इनके प्रदेशोंका शरीरसे सम्बन्ध नहीं रहता। इनका काल 'अ इ उ ऋ लृ' इन पांच ह्रस्व अक्षरोंके बोलनेके बराबर रहता है। इस गुणस्थानमें उपान्त्य और अन्त्य समयमें शेष बची हुई ७२ और १३ प्रकृतियोंका क्षय हो जाता है। इसके बाद ही ये प्रभु गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते हैं।

जोवसमास

जीवसमास—जिन सदृश धर्मों द्वारा अनेक जीवोंका संग्रह किया जा सके उन सदृश धर्मोंका नाम जीव समास है। ये १४ होते हैं—

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त, २. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त, ३. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त, ४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त, ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, १० चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त. १३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त ।

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन इन्द्रिय है तथा बादर शरीर (जो दूसरे बादरको रोक सके और जो दूसरे बादरसे रुक सके) है और जिनकी शरीर पर्याप्ति भी पूर्ण होगई है वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त हैं । ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रूप पांच प्रकारके होते हैं ।

२. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त—एकेन्द्रिय बादरोंमें उत्पन्न होने वाले जीव, उस आयुके प्रारम्भसे लेकर जब तक उनकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, बादर अपर्याप्त कहलाते हैं । इनमेंसे जो जीव ऐसे हैं कि जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जायगा उन्हें लब्ध्यपर्याप्त कहते हैं जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई, परन्तु पर्याप्ति पूर्ण नियम से करेंगे उन्हें निर्वृत्यपर्याप्त कहते हैं । इन जीवसमासोंमें अपर्याप्त शब्दसे दोनों अपर्याप्तोंका ग्रहण करना चाहिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त—जो जीव एकेन्द्रिय हैं, सूक्ष्म (जिनका शरीर न दूसरेको रोक सकता और न दूसरेसे रुक सकता व सूक्ष्म नाम कर्मका जिनके उदय है) एवं पर्याप्त हैं उन्हें एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त कहते हैं।

४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त—एकेन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त जीवोंको एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त कहते हैं।

५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन रसना ये दो इन्द्रिय हैं तथा जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें द्वीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त—उन द्वीन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्य-पर्याप्त हैं या अभी निवृत्यपर्याप्त हैं, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन, रसना घ्राण ये तीन इन्द्रिय हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं, उन्हें त्रीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं

८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त— उन त्रीन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्य-पर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

१०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त—उन चतुरिन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, चतुरिन्दिय अपर्याप्त कहते हैं।

११. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र ये पाचों इन्द्रियां हो, किन्तु मन नहीं हो वे असंज्ञी पंचेन्द्रिय कहलाते हैं। वे पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय केवल तिर्यंचगतिमें होते हैं। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रय जीव भी केवल तिर्यंच गतिमें होते हैं।

१२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

१३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त—संज्ञी अर्थात् मनसहित पंचेन्द्रिय जीव पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्याप्त कहलाते हैं।

१४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निर्वृत्यपर्याप्त हैं, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

विशेष—सिद्ध भगवान् अतीतजीवसमास होते हैं।

पर्याप्ति

पर्याप्ति—आहार वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणाके परमाणुओंको शरीर, इन्द्रिय आदिरूप परिणमावनेकी शक्तिकी पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

पर्याप्ति ६ हैं—(१) आहारपर्याप्ति, (२) शरीरपर्याप्ति (३) इन्द्रियपर्याप्ति, (४) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, (५) भाषा-पर्याप्ति, (६) म:न पर्याप्ति।

१. आहारपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल और रस भागरूप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्ति की पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं।

२. शरीरपर्याप्ति—जिन परमाणुओंको खलरूप परिणमाया था उनको हाड़ वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

३. इन्द्रियपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणमावनेको तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इन्द्रियपर्याप्ति कहते है।

४. श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको श्वासोच्छ्‌वासरूप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्‌वासपर्याप्ति कहते हैं।

५. भाषापर्याप्ति—भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचन रूप परिणमावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषापर्याप्ति कहते हैं।

६. मनः पर्याप्ति—मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें आठ पांखुड़ीके कमलाकार मनरूप परिणमावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मनः पर्याप्ति कहते हैं।

विशेष—सिद्ध भगवानको अतीतपर्याप्त कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राण

प्राण—जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो व वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो उनको प्राण कहते हैं।

प्राण १० है—

(१) स्पर्शनेन्द्रिय, (२) रसनेन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय, (४) चक्षुरिन्द्रिय, (५) श्रोत्रेन्द्रिय. (६) मनोवल, (७) वचनवल, (८) कायवल, (९) आयु, और (१०) श्वासोच्छ्वास।

विशेष—सिद्ध भगवान् अतीतप्राण कहे जाते हैं।

संज्ञा

संज्ञा—वांछाके संस्कारको संज्ञा कहते हैं। ये संज्ञा ४ हैं—

(१) आहारसंज्ञा, (२) भयसंज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, और (४) परिग्रहसंज्ञा।

१. आहारसंज्ञा—आहारसम्बन्धी वांछाके संस्कारको आहारसंज्ञा कहते हैं।

२. भयसंज्ञा—भयसम्बन्धी परिणामके संस्कारको भय संज्ञा कहते हैं।

३. मैथुनसंज्ञा—मैथुनसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको मैथुन संज्ञा कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. परिग्रहसंज्ञा—परिग्रहसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको परिग्रह संज्ञा कहते हैं।

विशेष—दशम गुणस्थानसे ऊपरके जीव अतीतसंज्ञ कहलाते हैं।

मार्गणा

मार्गणा—जिन धर्मविशेषोंसे जीवोंकी खोज हो सके, उन धर्मविशेषोंसे जीवोंको खोजना मार्गणा है। ये १४ हैं—

(१) गति, (२) इन्द्रियजाति, (३) काय, (४) योग, (५) वेद, (६) कषाय, (७) ज्ञान (८) संयम, (९) दर्शन, (१०) लेश्या, (११) भव्यत्व, (१२) सम्यक्त्व, (१३) संज्ञी (१४) आहारक।

गतिमार्गणा

(१) गतिमार्गणा—गतिनामा नामकर्मके उदयसे उस उस गतिविषयक भावके कारणभूत जीवकी अवस्थाविशेषको गति कहते हैं। इसकी मार्गणा ५ हैं—

(१) नरकगति, (२) तिर्यंच गति (३) मनुष्यगति, (४) देवगति, (५) अगति याने गतिरहित।

१. नरक गति—इस पृथ्वीके नीचे सात नरक हैं उनमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारकी जीव रहते हैं, उन्हें बहुत काल पर्यन्त घोर दुःख सहना पड़ता है, उनकी गतिको नरकगति कहते हैं।

२. तिर्यंच गति—नारकी, मनुष्य व देवके अतिरिक्त जितने संसारी जीव हैं वे सब तिर्यञ्च कहलाते हैं। एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामिल हैं) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असैनी पंचेन्द्रिय ये तो नियमसे तिर्यञ्च होते हैं। उनकी गतिको तिर्यञ्च गति कहते हैं।

३. मनुष्यगति—स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते हैं, इनकी गतिको मनुष्यगति कहते हैं।

४. देवगति—भवनवासी, व्यन्तर, (जिनके निवास स्थान इस पृथ्वीके खरभाग व पङ्कभागमें है) ज्योतिष्क (सूर्य, चन्द्र, तारादि) व वैमानिक (१६ स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, ५ अनुत्तरमें रहने वाले) इन चार प्रकारके देवोंकी गतिको देवगति कहते हैं।

(४) अगति (गतिरहित)--गतिसे रहित जीवोंको गतिरहित कहते हैं, सिद्धोंके गति नहीं है, ये गतिरहित हैं।

इन्द्रियजाति-मार्गणा

इन्द्रियावरणके क्षयोपशमसे होने वाले संसारी आत्माके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाह्य चिन्हविशेषको इन्द्रिय कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ हैं—

१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय ५. पंचेन्द्रिय ६. अतीन्द्रिय।

एकेन्द्रिय आदि का वर्णन हो चुका है।

अतीन्द्रिय—जो इन्द्रियों (द्रव्येन्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों) से रहित हैं वे अतीन्द्रिय कहलाते हैं।

कायमार्गणा

आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गल-पिण्डको काय कहते हैं। इसकी मार्गणा ७ हैं :—

१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक (जलकायिक) ३. अग्निकायिक ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकाय।

जिनके पृथ्वी आदि शरीर हो वे पृथ्वीकायिक आदि कहलाते हैं।

अकाय—जिनके कोई प्रकारका काय नहीं रहा वे अकायिक (अकाय) कहलाते हैं :—

योगमार्गणा

मन, वचन, कायके निमित्तसे आत्मप्रदेशके परिस्पंद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(हलन, चलन) का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते हैं। इसकी मार्गणा १६ हैं :—

१, सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनोयोग ४. अनुभयमनोयोग, ५. सत्यवचनयोग, ६. असत्यवचनयोग, ७. उभयवचनयोग, ८, अनुभयवचनयोग, ६. औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग, ११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रियकमिश्रकाययोग, १३. आहारककाययोग, १४. आहारकमिश्रकायोग १५. कर्माणकाययोग, १६. अयोग।

१. सत्यमनोयोग—सत्य वचनके कारणभूत मनको सत्य मन कहते हैं, उसके निमितसे होने वाले योगको सत्य मनोयोग कहते हैं।

२. असत्यमनोयोग—असत्य बचनके कारणभूत मनको असत्य मन कहते हैं और उसके निमित्तसे होने वाले योग को असत्य मनोयोग कहते हैं।

३. उभयमनोयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) मनके निमित्तसे होनेवाले योगको उभय मनोयोग कहते हैं।

४. अनुभय मनोयोग—अनुभय (न सत्य न असत्य) मनके निमित्तसे होनेवाले योगको अनुभय मनोयोग कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. सत्यवचनयोग—सत्य वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको सत्यवचनयोग कहते हैं।

६. असत्यवचनयोग—असत्य वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको असत्यवचनयोग कहते हैं।

७. उभयवचनयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको उभयवचनयोग कहते हैं।

८. अनुभयवचनयोग—अनूभय (न सत्य न असत्य) वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको अनुभय वचनयोग कहते हैं।

९. औदारिककाययोग—मनुष्य तिर्यञ्चोंके शरीरको औदारिक शरीर कहते हैं, उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे औदारिककाय योग कहते हैं।

१०. औदारिकमिश्रकायोग—कोई प्राणी मरकर मनुष्य या तिर्यञ्च गतिमें स्थानपर पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह औदारिक वर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जबतक शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित औदारिक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रयत्न होता है उसे औदारिकमिश्रकाययोग कहते हैं।

११. वैक्रियक काययोग—देव व नारकियोंके शरीरको वैक्रियक काय कहते हैं। उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे वैक्रियककाय योग कहते हैं।

१२. वैक्रियकमिश्रकाययोग—कोई मनुष्य या तिर्यञ्च मर कर देव या नरकगतिमें स्थानपर पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह वैक्रियक वर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है, उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जबतक शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित वैक्रियक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका प्रयत्न होता है उसे वैक्रियकमिश्रकाययोग कहते हैं।

१३. आहारककाययोग—सूक्ष्मतत्त्वमें संदेह होनेपर या तीर्थवंदनादिके निमित्त आहारक ऋद्धि वाले छठे गुण-स्थानवर्ती मुनियोंके मस्तिष्कसे १ हाथका धवल, शुभ, व्याघातरहित आहारक शरीर निकलता है उसे आहारक काय कहते हैं, उसके निमित्तसे होनेवाले योग को आहारक काययोग कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ आहारकमिश्रकाययोग—आहारक शरीरकी पर्याप्ति जब तक पूर्ण नहीं होती तब तक औदारिक व आहारक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो प्रयत्न होता है उसे आहारकमिश्रकाययोग कहते हैं।

१५. कर्माणकाययोग—मोड़ेवाली विग्रहगतिको प्राप्त चारों गतियोंके जीवोंके तथा प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवली जिनके कार्माण काय होता है, उसके निमित्तसे होनेवाले योगको कार्माणकाययोग कहते हैं।

१६. अयोग—अयोग केवली व सिद्ध भगवानके योग नहीं होता है। योगरहित अवस्थाको अयोग कहते हैं।

वेदमार्गणा

पुवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेदके उदयसे उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषाको वेद कहते हैं। इसकी मार्गणा ४ हैं—

१. पुरुषवेद, २. स्त्रीवेद, ३. नपुंसक वेद, ४. अपगतवेद।

१ पुरुषवेद—जिस भावमें स्त्रीके साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुरुषवेद कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. स्त्रीवेद—जिस भावमें पुरुषके साथ रमणकी इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं।

३. नपुंसकवेद—जिसभावमें दोनोंके साथ रमण करने कीइच्छा हो उसे नंपुसकवेद कहते हैं।

४ अपगतवेद—जहाँ वेदका अभाव हो।

कषाय-मार्गणा

जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचरित्र, सकलचरित्र और यथाख्यात चरित्ररूप गुणको घाते उसे कषाय कहते हैं। इसकी मार्गणा २६ हैं—

१—४. अनंतानुवन्धी क्रोध मान माया लोभ, ५-८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, ९-१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, १३-१६. संज्वलन क्रोध मान माया लोभ, १७. हास्य १८. रति, १९. अरति, २०. शोक, २१. भय, २२. जुगुप्सा, २३. पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद, २५. नपुसंकवेद, २६. अकषाय।

१–४. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते हैं जो आत्माके सम्यक्त्व गुण को घातें।

५–८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहते हैं जो देशचारित्रको घातें। (देशचारित्र श्रावकके अर्थात् पंचमगुणस्थानवर्ती जी के होता है)।

९–१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ— उन्हें कहते हैं जो सकलचारित्रको घातें (सकल चारित्र मुनियोंके होता है।)

१३–१६. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ— उन्हें कहते हैं जो यथाख्यातचारित्रको घातें। (यथाख्यातचारित्र ११, १२, १३, १४ वें गुणस्थानमें होता है)

१७. हास्य—हँसनेके परिणामको कहते हैं।

१८. रति—इष्ट पदार्थमें प्रीति करनेको कहते हैं।

१९. अरति—अनिष्ट पदार्थोंमें अप्रीति करनेको कहते हैं।

२०. शोक—रंजके परिणामको कहते हैं।

२१. भय—डरको कहते हैं।

२२. जुगुप्सा—ग्लानिको कहते हैं।

२३–२४–२५. पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद—का वर्णन हो चुका।

२६. अकषाय—कषायके अभावको कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानमार्गणा

वस्तुके जाननेको ज्ञान कहते हैं। इसकी मार्गणा ८ है—

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनःपर्ययज्ञान ५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान, ८, कुअवधिज्ञान, (विभंगावधि ज्ञान)

१. मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनके निमित्तसे उत्पन्न होनेवाले ज्ञानको मतिज्ञान कहते हैं।

२. श्रुत ज्ञान—मतिज्ञानसे जाने हुये पदार्थके सम्बन्धमें अन्य विशेष जाननेको श्रुतज्ञान कहते हैं।

३. अवधिज्ञान—इन्द्रिय और मनकी सहायताके बिना, आत्मीय शक्तिसे रूपी पदार्थोंको द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लेकर जाननेको अवधिज्ञान कहते हैं।

४. मनःपर्ययज्ञान—दूसरेके मनमें तिष्ठते हुए (स्थित) रूपी पदार्थको इन्द्रिय मनकी सहायताके विना आत्मीय शक्तिसे जाननेको मनःपर्ययज्ञान कहते हैं।

५. केवलज्ञान—तीन लोक तीन कालवर्ती समस्त द्रव्य पर्यायोंको एक साथ स्पष्ट जानना केवलज्ञान है।

६. कुमतिज्ञान— सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले मति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानको कुमतिज्ञान कहते हैं।

७. कुश्रुतज्ञान— सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले श्रुतज्ञानको कुश्रुतज्ञान कहते हैं।

८. कुअवधिज्ञान — सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले अवधिज्ञानको कुअवधिज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम विभङ्गावधिज्ञान है।

संयम-मार्गणा

संयम —अहिंसादि पंच व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पांच समितियोंका पालन करना, क्रोधादि कषायोंका निग्रह करना, मनोयोग आदि तीनों योगोंको रोकना, पाचों इन्द्रियोंका विजय करना सो संयम है। इसकी मार्गणा ८ हैं—

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहारविशुद्धि, ४. सूक्ष्मसाम्पराय, ५. यथाख्यात चारित्र, ६. असंयम, ७. संयमासंयम, ८ असंयम-संयम-संयमासंयम तीनोंसे रहित।

१. सामायिक—सब प्रकारकी अविरतिसे विरक्त होना व समताभाव धारण करना सामयिकसंयम है।

२. छेदोपस्थापना—भेदरूपसे व्रतके धारण करने को या व्रतोंमें छेद (भंग) होनेपर फिरसे व्रतोंके पालन करने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को छेदोपस्थापना संयम कहते हैं।

३. परिहारविशुद्धि—जिसमें हिंसाका परिहार प्रधान हो ऐसे शुद्धिप्राप्त संयमको परिहारविशुद्धि संयम कहते हैं।

४. सूक्ष्मसाम्पराय—सूक्ष्म कषाय (लोभ) वाले जीवोंके जो संयम होता है उसे सूक्ष्म साम्पराय संयम कहते हैं।

५. यथाख्यात संयम—कषायके अभावमें जो आत्माका अनुष्ठान होता है उसमें निवास करनेको यथाख्यात संयम कहते हैं।

६. असंयम—जहां किसी प्रकारके संयम या संयमासंयमका लेश भी न हो .से असंयम कहते हैं।

७. संयसासंयम—जिनके त्रसकी अविरतिका त्याग हो चुका हो, जिनके अणुव्रतका धारण है उनके चारित्रको संयमासंयम कहते हैं।

८. असंयम-संयम-संयमासयम-रहित—सिद्ध भगवान सदा अपने शुद्धस्वरूपमें स्थित हैं उनके ये तीनों नही पाये जाते सो वे असंयमसंयमसंयमासंयमरहित हैं।

दर्शन-मार्गणा

आत्माभिमुख अवलोकनको दर्शन कहते हैं, इसकी मार्गणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ हैं—

चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अविधिदर्शन, ४. केवलदर्शन।

१. चक्षुर्दर्शन—चक्षुरिन्द्रियजन्य ज्ञानसे पहले होने वाले दर्शनको चक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२. अचक्षुर्दर्शन—चक्षुरिन्द्रियके अलावा अन्य इन्द्रिय व मनसे उत्पन्न होने वाले दर्शनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं।

३. अवधिदर्शन—अवधिज्ञानसे पहिले होनेवाले दर्शनको अवधिदर्शन कहते हैं।

४. केवलदर्शन — केवलज्ञानके साथ-साथ होनेवाले दर्शनको केवलदर्शन कहते हैं।

लेश्या-मार्गणा

कषायसे अनुरंजित योगप्रवृत्तिको लेश्या कहते हैं, इसकी मार्गणा ७ हैं—

१. कृष्ण लेश्या, २. नील लेश्या, ३. कापोत लेश्या, ४. पीत लेश्या, ५. पद्म लेश्या, ६. शुक्ल लेश्या, ७. अलेश्य।

१. कृष्णलेश्या—तीव्र क्रोध करने वाला हो, वैरको न छोड़े, लड़नेका जिसका स्वभाव हो, धर्म और दयासे रहित हो, दुष्ट हो जो किसीके वश न हो ; ये लक्षण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्णा लेश्याके हैं।

२. नीललेश्या—काम करनेमें मन्द हो, स्वछंद हो, कार्य करनेमें विवेकरहित हो, विषयोंमें लम्पट हो, कामी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग जिसके अभिप्रायको सहसा नहीं जान सकें, अतिनिद्रालु हो, दूसरोंको ठगनेमें चतुर हो, परिग्रहमें तीव्र लालसा हो, ये लक्षण नील लेश्याके हैं।

३. कापोतलेश्या—रूसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्ष्या करे, दूसरोंका तिरस्कार करें, अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरेका विश्वास न करे, स्तुतिकरनेवाले पर संतुष्ट होवे, रणमें मरण चाहे, स्तुति करनेवालोको खूब धन देवे अपना अपना कार्य अकार्य न देखे। ये लक्षण कापोतलेश्याके हैं।

४. पीतलेश्या—कार्य, अकार्य, सेव्य असेव्ययो समझने वाला हो, सर्व-समदर्शी हो दया-परायण हो, दानरत कोमलपरिणामी हो। ये लक्षण पीतलेश्याके हैं।

५. पद्मलेश्या—त्यागी, भद्र, उत्तम कार्य करनेवाला, सहनशील, साधुगुरुपूजारत हो। ये लक्षण पद्मलेश्याके हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६. शुक्ललेश्या—पक्षपात न करे, निदान न बाँधे, सबमें समानताकी दृष्टि रक्खे, इष्टराग अनिष्टद्वेष न करे; ये लक्षण शुक्ललेश्याके हैं।

भव्यत्व-मार्गणा

जिन जीवोंके अनन्तचतुष्टयरूप सिद्धि व्यक्त होनेकी योग्यता हो वे भव्य हैं। उनके भावको भव्यत्व कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं—

१. भव्यत्व, २. अभव्यत्व ३. अनुभय (न भव्यत्व न अभव्यत्व)

उक्त योग्यताके अभावको अभव्यत्व कहते हैं।

सिद्धजीव न भव्य हैं और न अभव्य हैं।

सम्यक्त्व-मार्गणा

मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत तत्त्वोंके यथार्थ श्रद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं। इसकी मार्गणा ६ हैं—

१. औपशमिक सम्यक्त्व, २. वेदक (क्षायोपशमिक सम्यक्त्व) ३. क्षायिक सम्यक्त्व- ४. मिथ्यात्व, ५. सासादनसम्यक्त्व, ६. सम्यग्मिथ्यात्व।

१ औपशमिक सम्यक्त्व- अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, और सम्यक् प्रकृति इन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ प्रकृतियोंके उपशमसे जो सम्यक्त्व होता है उसे औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं। इसके दो भेद हैं—

१. प्रथमोपशमसम्यक्त्व, २. द्वितीयोपशमसम्यक्त्व।

मिथ्यात्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशमसम्यक्त्व कहते हैं। अनादि मिथ्यादृष्टि व मिश्रप्रकृति सम्यकप्रकृतिकी उद्वेलना कर चुकने वाले जीवोंके अनंतानुबंधी ४ व मिथ्यात्व इन पाँच के उपशम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है और ७ की सत्ता वालोंके ७ प्रकृतियोंके उपशमसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं और यह भी ७ प्रकृतियोंके उपशमसे होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसके क्षायिक सम्यक्त्व या औपशमिक सम्यक्त्व होना आवश्यक है। वहाँ यदि उपशम सम्यक्त्व करे तब वह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहलाता है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमें मरण हो सकता है। यदि मरण हो तो देवगतिमें ही जावेगा। प्रथमोपशमसम्यक्त्वमें मरण नहीं होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. वेदक सम्यक्त्व (क्षायोपशमिक)—अनंतानुबंधी ४ व मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व इन ६ प्रकृतियोंके उदयाभावी क्षय व उपशमसे तथा सम्यक्प्रकृतिके उदयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे वेदक सम्यक्त्व कहते है। इस सम्यक्त्वमें सम्यक्प्रकृतिके उदयके कारण सम्यग्दर्शनमें चल मलिन व अगाढ़ (जो कि सूक्ष्म दोष हैं) दोष लगते हैं।

३. क्षायिक सम्यक्त्व—अनंतानुबंधी क्रोध मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियोंके क्षयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिक सम्यक्त्व कहते हैं।

४. मिथ्यात्व—मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे तत्त्वोंके अश्रद्धानरूप विपरीत अभिप्रायको मिथ्यात्व कहते हैं।

५. सासादन सम्यक्त्व—सम्यक्त्वकी विराधना होनेपर यदि मिथ्यात्वका उदय न आये तो मिथ्यात्वका उदय न आने तक अनंतानुबंधी कषायके उदयसे, होनेवाला विपरीत आशय सासादनसम्यक्त्व कहलाता है।

६. सम्यग्मिथ्यात्व—सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे जो मिश्र परिणाम होता है, जिसे न तो सम्यक्त्व रूप ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कह सकते हैं और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते हैं, किन्तु आशय जो कुछ समीचीन व कुछ असमीचीन है उसे सम्यग्मिथ्यात्वं कहते हैं।

संज्ञीमार्गणा

जो संज्ञ अर्थात् मनसहित हैं उन्हे संज्ञी कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं—

१. संज्ञी २. असंज्ञी, ३. अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी)

१. संज्ञी–सैनी पंचेन्द्रिय ही संज्ञी होते हैं। ये चारों गतियोंमें पाये जाते हैं।

२. असंज्ञी–एकेन्द्रियसे लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक जीव असंज्ञी होते है, ये सब तिर्यञ्च हैं।

३. अनुभय—सयोगकेवली व अयोगकेवली व सिद्ध भगवान अनुभय हैं, ये न संज्ञी हैं, क्योंकि इनके भावमन नहीं और न असंज्ञी हैं क्योंकि अविवेक नहीं। सयोग केवलीके यद्यपि द्रव्यमन है, परन्तु भावमन नहीं है।

आहारक-मार्गणा

शरीर, मन, वचनके योग्य वर्गणाओंका ग्रहण करना आहार कहलाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब कोई जीव मरकर दूसरी गतिमें जाता है तब जन्मस्थान पर पहुचते ही आहारक हो जाता है, इससे पहिले जीव अनाहारक रहता है, किन्तु ऋजुगतिसे जानेवाला यह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थानपर पहुँच जाता है । तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव जब केवलि-समुद्घात करते हैं, तब २ प्रतरके समय, १ लोकपूरणका समय, इन तीन समयोंमें अनाहारक होते है, शेष समय आहारक होते हैं । अयोग केवली और सिद्ध भगवान अनाहारक ही होते हैं ।

उपयोग

बाह्य तथा आभ्यन्तर कारणोंके द्वारा होने वाली आत्मके चेतना गुणकी परिणतिको उपयोग कहते हैं । उपयोग २ हैं—

१ साकारोपयोग, २ निराकारोपयोग ।

साकारोपयोग—ज्ञानोपयोगको कहते हैं ।

निराकारोपयोग—दर्शनोपयोगको कहते हैं ।

ध्यान

एक विषयमें चिन्तवनके रुकनेको ध्यान कहते हैं, ध्यान १६ प्रकारका है—आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्म्यध्यान ४, शुक्लध्यान ४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्तध्यान ४---१. इष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज ३. वेदनाप्रभव ४ निदान।

रौद्रध्यान ४—१. हिंसानंद, २. मृषानंद, ३. चौर्यानन्द, ४. परिग्रहानन्द।

धर्म्यध्यान ४—१. आज्ञाविचय, २. अपायविचय, ३. विपाक विचयना ४. संस्थानविचय।

शुक्लध्यान ४—१. पृथक्त्ववितर्कवीचार, २. एकत्ववितर्क अवीचार ३. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती, ४. व्युपरतक्रियानिवृत्ति।

१. इष्टवियोगज आर्तध्यान—इष्ट पदार्थके वियोग होनेपर उसके संयोगके लिए चिन्तवन करना इष्टवियोगज आर्तध्यान है।

२ अनिष्टसंयोगज—अनिष्ट पदार्थके संयोग होनेपर उसके वियोगके लिए चिन्तवन करना अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान है।

३ वेदनाप्रभव—शारीरिक पीड़ा होनेपर उसके सम्बन्ध में चिन्तवन करना वेदनाप्रभव आर्तध्यान है।

४ निदान—भोग विषयोंकी चाह सम्बन्धी चिन्तवन को निदाननामक आर्तध्यान कहते हैं। आर्तध्यानमें दुःख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप परिणाम रहता है।

आर्त=दुःख उसमें होने वालेको आर्त कहते हैं।

५. हिंसानन्द रौद्रध्यान--कृत कारित आदि हिंसामें आनन्द मानना व हिंसाके लिए चिन्तवन करना हिंसानन्द रौद्र ध्यान है।

६. मृषानन्द—झूंठमें आनन्द मानना व झूंठके लिए चिन्तवन करना सो मृषानन्द रौद्रध्यान है।

७. चौर्यानन्द—चोरीमें आनन्द मानना व चोरीके लिए चिन्तवन करना सो चौर्यानन्द रौद्रध्यान है।

८. परिग्रहानन्द—परिग्रहमें आनन्द मानना व परिग्रह याने विषयकी रक्षाके लिए चिन्तवन करना परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है।

रुद्र=क्रूर, उसके भावको रौद्र कहते हैं।

९. आज्ञाविचय—आगमकी आज्ञाकी श्रद्धासे तत्त्व चिन्तवन करना आज्ञाविचय धर्म्य ध्यान है।

१०. अपायविचय—अपने या परके रागादि भाव जो दुःखके मूल हैं उनके विनाश होनेका चिन्तवन करना अपायविचय धर्म्य ध्यान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. विपाकविचय—कर्मोंके फलके सम्बन्धमें संवेगवर्द्धक चिन्तवन करना विपाकविचय धर्म्य ध्यान है।

१२. संस्थानविचय—लोकके आकार काल आदि के आश्रय जीवके परिभ्रमणादिविषयक असारताका चिन्तवन करना व अरहन्त, सिद्ध मंत्र पद आदि के आश्रयसे तत्त्वचिन्तवन करना सो संस्थानविचय धर्म्य ध्यान है।

१३. पृथक्त्ववितर्कवीचार—अर्थ, योग, व शब्दोंके परिवर्तन सहित श्रुतके चिन्तवनको पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१४. एकत्ववितर्क अवीचार—एकही अर्थमें एक ही योग से उन्हीं शब्दोंमें श्रुतके चिन्तवनको एकत्ववितर्क-अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं।

१५. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति—सयोगकेवलीके अन्तिम अन्तर्मुहूर्तमें जव कि बादर योग भी नष्ट होजाता है तब सूक्ष्म काययोगसे भी दूर होनेके लिए जो योग, उपयोगकी स्थिरता है उसे सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति शुक्लध्यान कहते हैं।

१६ व्युपरतक्रियानिवृत्ति—समस्त योग नष्ट हो चुकने पर अयोगकेवलीके यह व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है।

आस्रव

कर्मोंके आनेके कारणभूत भावको आस्रव कहते हैं। इसके ५७ भेद हैं—

मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, योग १५,

मिथ्यात्व ५

एकान्तमिथ्यात्व, विपरीतमिथ्यात्व, संशयमिथ्यात्व, विनयमिथ्यात्व, अज्ञानमिथ्यात्व।

१. एकान्तमिथ्यात्व—अनन्तधर्मात्मक वस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मकी ही श्रद्धा करना एकान्तमिथ्यात्वहैं।

२. विपरीत मिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपसे विपरीत स्वरूपकी श्रद्धा करना विपरीत मिथ्यात्व है।

३. संशयमिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपमें संशय करना संशयमिथ्यात्व है।

४. वैनयिक (विनय) मिथ्यात्व—देव कुदेव में, तत्त्व अतत्त्व में, शास्त्र, कुशास्त्र में, गुरु कुगुरु में, सभीको भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है।

५. अज्ञानमिथ्यात्व—हित, अहितका विवेक न रखना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्ञान मिथ्यात्व है।

समस्त संकटोंका मूल कारण मिथ्यात्व भाव है।

अविरति १२

काय-अविरति ६, विषय-अविरति ६,

काय-अविरति ६—पृथ्वीकायिक-अविरति; जलकायिक-अविरति, अग्निकायिक-अविरति, वायुकायिक-अविरति, वनस्पतिकायिक-अविरति, त्रसकायिक अविरति।

विषय-अविरति ६—स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति; रसनेन्द्रिय-विषय-अविरति, घ्राणेन्द्रियविषय—अविरति; चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति; श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति; मनोविषय-अविरति।

१. पृथ्वीकायिक-अविरति—पृथ्वीकायिक जीवोंकी हिंसा से विरक्त न होनेको पृथ्वीकायिक-अविरति कहते हैं।

२. जलकायिक--अविरति—जलकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको जलकायिक-अविरति कहते हैं।

३. अग्निकायिक-अविरति—अग्निकायिक जीवोंकी हिंसा से विरक्त न होनेको अग्निकायिक-अविरति कहते हैं।

४. वायुकायिक-अविरति—वायुकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. वनस्पतिकायिक-अविरति—वनस्पतिकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं।

६. त्रसकायिक-अविरति—त्रसकायिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय) जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको त्रसकायिक-अविरति कहते हैं।

७. स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति—स्पर्शन इन्द्रियके विषयोंसे विरक्त न होनेको स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

८. रसनेन्द्रियविषय अविरति—रसना इन्द्रियके विषय (स्वाद) से विरक्त न होनेको रसनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

९. घ्राणेन्द्रियविषय- अविरति—घ्राण इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको घ्राणेन्द्रियबिषय-अविरति कहते हैं।

१०. चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति—चक्षु इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

११. श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति—श्रोत्र इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं।

१२. मनोविषय-अविरति—मनके विषयसे (सन्मान आरा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मकी चाह आदिसे) विरक्त न होनेको मनोविषय-अविरति कहते हैं।

कषाय २५

इनका वर्णन कषायमार्गणामें हो चुका है।

योग १२

इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है।

भाव

भाव—अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम आदि होनेपर जो गुण (स्वभाव या विभाव रूप) प्रगट हों उन्हें भाव कहते हैं)। इनका उपादान कारण जीव है अर्थात् ये जीवमें ही होते हैं अन्य द्रव्यमें नहीं होते; इसलिये ये जीवके निज तत्त्व कहलाते है।

ये भाव ५३ होते हैं—

औपशमिक २, क्षायिक ६, क्षायोपशमिक १८, औदयिक २१, और पारिणमिक ३।

औपशमिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम होनेपर जो गुण (भाव) प्रकट हो उन्हें औपशमिक भाव कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औपशमिक भावके २ भेद हैं :—१. औपशमिक सम्यक्त्व, २. औपशमिक चारित्र।

१. औपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है।

२. औपशमिक चारित्र—चारित्र मोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमसे जो चारित्र होता है उसे औपशमिक चारित्र कहते हैं।

क्षायिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके क्षयसे जो गुण प्रकट हों उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं।

क्षायिक भावके ९ भेद है—१ क्षायिकज्ञान (केवल ज्ञान), २. क्षायिक दर्शन, (केवल दर्शन) क्षायिक दान, ४. क्षायिक लाभ ५. क्षायिक भोग, ६ क्षायिक उपभोग, ७ क्षायिक वीर्य, क्षायिक सम्यक्त्व, ९. क्षायिक चारित्र।

१. क्षायिक ज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके क्षयसे जो ज्ञान प्रकट हो उसे क्षायिक ज्ञान (केवल ज्ञान) कहते हैं।

२. क्षायिक दर्शन—दर्शनावरण कर्मके क्षयसे जो दर्शन प्रगट हो उसे क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) कहते हैं।

३. क्षायिक दान—दानान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसे क्षायिक दान कहते हैं।

४. क्षायिक लाभ—लाभान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो उसे क्षायिक लाभ कहते हैं।

५. क्षायिक भोग—भोगान्तरके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक भोग कहते हैं।

६. क्षायिक उपयोग—उपभोगान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षयिक उपभोग कहते हैं।

७. क्षायिक वीर्य वीर्यान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक वीर्य कहते हैं।

८. क्षायिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है।

९. क्षायिक चारित्र—चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके क्षयसे जो चारित्र हो उसे क्षायिकचारित्र कहते हैं।

क्षायोपशमिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंमें से किन्ही कर्मोंके स्पर्द्धकोंके उदयाभावी क्षयसे, किन्हीं स्पर्द्धोंके उपशमसे व किन्ही स्पर्द्धकोंके उदयसे जो भाव प्रकट हों उन्हें क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।

क्षायोपशमिक भावके ९ भेद हैं—ज्ञान ४ (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिज्ञान मनः पर्ययज्ञान)- अज्ञान ३ (कुमति, कुश्रुत कुअवधि, दर्शन ३ (चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन) लब्धि ५ (क्षायोपशमिक दान, लाभ, भोग, उपभोग ,वीर्य) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम।

(१-४) ज्ञान ४—इनका वर्णन हो चुका।

(५-७) अज्ञान ३—इनका वर्णन हो चुका।

(८-१०) दर्शन ३—इनका वर्णन भी हो चुका।

(११-१५) लब्धि ५—दानान्तराय आदिके क्षयोपशमसे क्षायोपशमिक दान आदि होते हैं।

१६ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका।

क्षायोपशमिक चारित्र—अप्रत्याख्यानावरण ४ व प्रत्याख्यानावरण ४ इन आठ प्रकृतियोंके क्षयोपशममें महाव्रतादिरूप चारित्र होता है उसे क्षायोपशमिक चारित्र कहते हैं।

१८ संयमासंयम—इसका वर्णन हो चुका।

औदयिक भाव

अपनी उत्पत्तिके निमित्तभूत कर्मोंके उदयसे जो भाव प्रकट हों उन्हें औदयिक भाव कहते हैं। इनके २१ भेद हैं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१-४) गति ४—नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव। (इनका वर्णन गतिमार्गणामें हो चुका है)।

(५-८) कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ (इनका बर्णन वेदमार्गणामें हो चुका है)

(९-११) लिङ्ग ३—पुंवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद (इनका वर्णन कषायमार्गणामें हो चुका है)।

१२. मिथ्यादर्शन—(इसका स्वरूप सम्यक्त्वमार्गणामें बताया है)।

१३. अज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके उदयसे जो ज्ञानका अभाव रूप भाव है उसे अज्ञान भाव कहते है, यह अज्ञान औदयिक है।

१४. असंयम—(इसका वर्णन संयममार्गणामें हो चुका है)।

१५. असिद्ध—जबतक आठों कर्मोंका अभाव नहीं होता तबतक असिद्ध भाव है।

(१६-२१) लेश्या ६—कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म शुक्ल। (इनका वर्णन लेश्यामार्गणामें हो चुका)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारिणामिक भाव

पारिणामिकभाव—जो कर्मोंके उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशमकी अपेक्षाके विना होवे वह पारिणामिक भाव है। पारिणामिक भाव के ३ भेद हैं :—

१. जीवत्व, २. भव्यत्व, ३. अभव्यत्व।

१. जीवत्व—जिससे जीवे वह जीवत्व है। वह २ प्रकार का है—

पहिला ज्ञानदर्शनरूप और दूसरा दसप्राणरूप। इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व शुद्धपारिणामिक भाव है। प्राणरूप जीवत्व अशुद्ध पारिणामिक भाव है।

२-३. भव्यत्व अभव्यत्व—(इनका वर्णन भव्यत्वमार्गणामें किया है)।

अवगाहना

जिन जीवोंके देह है उनके देह प्रमाण तथा देहरहित (सिद्ध) जीवोंके जितने शरीरसे मोक्ष गये हैं, उतने प्रमाण अवगाहनाका वर्णन करना इस स्थानका प्रयोजन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाति

उत्पत्तिस्थानको योनि या जाति कहते हैं। जाति ८४ लाख हैं।

ये सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित, शीत, उष्ण, शीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृतविवृत, इन ६ भेदोंके प्रभेदोंसे ८४ लाख हो जाते हैं।

किन जीवोंकी कितनी जाति हैं :—

नित्य निगोदकी	७ लाख
इतरनिगोदको	७ लाख
पृथ्वीकायिककी	७ लाख
जलकायिककी	७ लाख
अग्निकायिककी	७ याख
वायु कायिककी	७ लाख
बनस्पतिकायिककी	१० लाख
द्वीन्द्रियकी	२ लाख
त्रीन्द्रियकी	२ लाख
चतुरिन्द्रियकी	२ लाख
तिर्यञ्च पंचेन्द्रियकी	४ लाख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवकी	४ लाख
नारककी	४ लाख
मनुष्यकी	१४ लाख
	८४ लाख हैं

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्चकी ६२ लाख; एकेन्द्रियकी ५२ लाख; त्रसकी ३२ लाख; पंचेन्द्रियकी २६ लाख; विकलत्रयकी ६ लाख, जोड़ करनेपर होती हैं। इसी प्रकार अन्यत्र भी लगाना चाहिये।

कुल

शरीरके भेदके कारणभूत नोकर्म वर्गणावोंके भेदको कुल कहते हैं। सब कुल १९७॥ लाख कोटि (१९ नील ७५ खरब) होते हैं वे इस प्रकार हैं:—

पृथ्वीकायिक	२२ लाख कोटि
जलकायिक	७ लाख कोटि
अग्निकायिक	३ लाख कोटि
वायुकायिक	७ लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	२८ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वीन्द्रिय	७ लाख कोटि
त्रीन्द्रिय	८ लाख कोटि
चतुरिन्द्रिय	९ लाख कोटि
जलचर	१२॥ लाख कोटि
थलचर (पशु)	१० लाख कोटि
नभचर (पक्षी)	१२ लाख कोटि
छातीके सहारे चलने वाले तिर्यञ्च दुमही आदि	९ लाख कोटि
देव	२६ लाख कोटि
नारकी	२५ लाख कोटि
मनुष्य	१२ लाख कोटि
	१९७॥ लाख कोटि

अङ्कों में कुलों का वर्णन

पृथ्वीकायिक	२२०००,००,००,००,०००
जलकायिक	७०००,००,००,००,०००
अग्निकायिक	३०००,००;००,००,०००
वायुकायिक	७०००,००,००,००,०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनस्पतिकायिक	२८०००,००,००,००,०००
द्वीन्द्रिय	७०००,००,००,००,०००
त्रीन्द्रिय	८०००,००,००,००,०००
चतुरिन्द्रिय	९०००,००,००,००,०००
जलचर	१२५००,००,००,००,०००
थलचर	१००००,००,००,००,०००
नभचर	१२०००,००,००,००,०००
छातीके सहारे चलने वाले	
उरुपरिसर्पादि	९०००,००,००,००,०००
देव	२६०००,००,००,००,०००
नारक	२५०००,००,००,००,०००
मनुष्य	१२०००,००,००,००,०००
	१९७५००,००,००,००;०००

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्च १३४॥ लाख कोटि एकेन्द्रिय ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रियतिर्यञ्च ४३॥ लाख कोटि पंचेन्द्रिय १०६॥ लाख कोटि, विकलत्रय २४ लाख कोटि जोड़ करनेपर होते हैं, इसी तरह अन्य लगा लेना चाहिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकरणके योग्य संक्षिप्त नयविवरण—

नय—ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं।

अध्यात्मज्ञानके प्रयोजक नयके प्रकार–नय ४ प्रकारके हैं—
१. व्यवहार नय, २. अशुद्धनिश्चय नय, ३. शुद्धनिश्चय नय,
४. परमशुद्धनिश्चय नय।

१. व्यवहार नय—दो या अनेक द्रव्योंके सम्बन्धसे होने वाली व्यञ्जन पर्याय देखना, अन्यके निमित्तसे होने वाली नैमित्तिक पर्याय देखना व्यवहार नय है। जैसे कर्मके उदय से राग हुआ है, जीव शरीरमें बद्ध है, जीव नारकी है, जीव तिर्यञ्च है आदि अभिप्राय व्यवहार नय है।

२. अशुद्ध निश्चयनय—किसी एक द्रव्यकी विभाव पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना अशुद्धनिश्चय नय है। जैसे आत्माका राग है, आत्माका विकल्प है आदि।

३. शुद्धनिश्चय नय—किसी एक द्रव्यकी स्वभाव--पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना शुद्ध निश्चय नय है। जैसे जीवका केवल ज्ञान है, जीवका अनन्त सुख है आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४. परम शुद्ध निश्चय नय—पर्यायकी व गुण भेदकी दृष्टि न करके मात्र स्वभाव या अनाद्यनन्त केवल द्रव्यको देखना परम शुद्ध निश्चयनय है। जैसे—आत्मा चैतन्य मात्र है आदि।

विशेष—एक उपचारनय भी कहलाता है जो एक वस्तुका किसी अत्यन्त भिन्न याने असंयुक्त अन्य वस्तुमें सम्बन्ध मनाता है जैसे कि मकान मेरा है, पुत्र मेरा है, इत्यादि, किन्तु इसकी चर्चाकी बुद्धिमानोंमें जरा भी प्रतिष्ठा नहीं है। अतः इस नया भासके सम्बन्धमें कुछ भी विचार नहीं करना है।

जीवस्थानचर्चाके विषयोंका आध्यात्मिक विवरण

जीवस्थान चर्चामें गुणस्थान आदि जिन जिन विषयोंका वर्णन किया है वे सब पर्यायें हैं। पर्यायें शक्तिकी कहलाती हैं। ये सब पर्यायें जीव द्रव्यके किन किन गुणोंकी हैं, इसका नक्शा द्वारा विवरण करते हैं—यहां समझनेकी बात यह है कि जैसे द्रव्य अनादिनिधन है वैसे ही गुण भी अनादिनिधन है किन्तु पर्यायें सादि सान्त होती हैं। सन्तान-प्रवाहरूपमें भले ही कोई पर्याय अनादि या अनन्त अथवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनादि अनन्त हो, किन्तु सूक्ष्मतासे वे भी समय समय वर्ती हैं। इसमें सुख गुण व क्रियावती शक्तिकी पर्यायोंका पृथक् वर्णन नहीं है।

गुण	पर्यायें
(सहज) ज्ञान—	ज्ञानमार्गणा सब, संज्ञित्व मार्गणा, ज्ञानोपयोग, क्षायिकज्ञान, क्षायोपशमिक ज्ञान ४, अज्ञान ३, औदयिक अज्ञान, केवली।
(सहज) दर्शन—	दर्शनमार्गणा सब, दर्शनोपयोग, क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन), क्षायोपशमिक दर्शन ३।
(सहज) सुख—	साता, असाता, आत्मीय आनन्द।
(सहज) वीर्य—	क्षायोपशमिक लब्धि ५, क्षायिक लब्धि ५।
(सहज) श्रद्धा—	सम्यक्त्व मार्गणा सब, औपशमिक सम्यक्त्व भाव, क्षायिक सम्यक्त्व भाव, वेदक सम्यक्त्व भाव, मिथ्यात्व भाव, मिथ्यात्व गुणस्थान, मिश्र गुणस्थान, अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सहज) चारित्र—वेदमार्गणा सब, कषायमार्गणा सब, संयम मार्गणा सब, ध्यान सब, अविरति आस्रव, क्षायिक चारित्र, औपशमिक चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम, कषाय, लिङ्ग, असंयम, संज्ञा ४, अतीतसंज्ञ, सासादन गुणस्थान, ५ वें से १४ वें गुणस्थान तक।

प्रदेशवत्त्व— स्वभावव्यञ्जन पर्याय, (गतिरहित, इन्द्रिय रहित, कायरहित, अनाहारक) अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण। विभावव्यञ्जन पर्याय (गति ४, इन्द्रियजाति ५, काय ६, अहारक) जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, कुल १९७॥ लाख कोटी, अवगाहना।

योग शक्ति— योगमार्गणा सब, लेश्यामार्गणा सब।

सर्व शक्तियां— पारिणामिक भाव, भव्यत्वमार्गणा, असिद्ध, सिद्ध, क्षेत्रान्तरित होना; स्थिर होना।

नोट—(१) जहां विग्रह गति, ऋजु गति, समुद्घात आदिका वर्णन आया है, वहां उन्हे क्रियावती शक्तिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्याय समझना ।

(२) पर्यायोंमें जहां आकुलता, अनाकुलताको विकासकी प्रमुखतासे विचारें तो वहां सुख गुणकी पर्यायें समझना। योनि व कुलको पुद्गलकी पर्यायें जानना ।

कषायोंको विशेषरूपसे जाननेके लिये इस नक्शेका आश्रय लेवें—

नाम व भेद		सामान्यालाप
कषाय	१६	
हास्यादि	४	
वेद	३	
भय	१	
जुगुप्सा	१	
जोड़	२५	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्रवोंको विशेषरूपसे समझनेके लिये इस नक्शेका

आश्रय लेवें—

नाम	भेद	सामान्यालाप
मिथ्यात्व	५	
विषय अविरति	६	
काय अविरति	६	
कषाय	१६	
हास्यादि	४	
वेद	३	
भय	१	
जुगुप्सा	१	
योग	१५	
जोड़	५७	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावोंको विशेषरूपसे समझनेके लिये इस नक्शेका आश्रय लेवें ।

नाम	भेद	सामान्यालाप
औपशमिक	२	
क्षायिक	६	
क्षायो० ज्ञान	४	
अज्ञान	३	
दर्शन	३	
लब्धि	५	
वेदक सम्यक्त्व	१	
सरागचारित्र	१	
संयमासंयम	१	
औ० गति	४	
कषाय	४	
लिङ्ग	३	
मिथ्यात्व	१	
अज्ञान	१	
असंयम	१	
असिद्ध	१	
लेश्या	६	
पारिणामिक	३	
कुल जोड़	५३	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवस्थानोंको घटित करनेके लिये कुछ ज्ञातव्य

१—एकेन्द्रिय; द्वीन्द्रिय; त्रीन्द्रिय; चतुरिन्द्रिय और नारकी तथा सब प्रकारके लब्ध्यपर्याप्तक ये सब जीव नियमसे नपुंसक ही होते हैं।

२—एकेन्द्रिय; द्वीन्द्रिय; त्रीन्द्रिय; चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय व नारकी जीव इन सब जीवोंके ३ अशुभ (कृष्ण; नील; कापोत) लेश्यायें ही होती हैं।

३—(a) औदारिक शरीर—मनुष्य और तिर्यञ्चोंके ही होता है।

(b) वैक्रियक शरीर देव और नारकियोंके ही होता है।

४—तिर्यञ्च गतिमें क्षायिक-सम्यग्दृष्टि जीव भोग-भूमिज तिर्यञ्चोंमें ही मिलेंगे और वहां भी वे तिर्यञ्च क्षायिक-सम्यग्दृष्टि हैं जिन्होंने पहिलेके मनुष्य भवमें क्षायिक-सम्यक्त्व उत्पन्न किया और उससे पहिले तिर्यञ्च आयुका बन्ध किया हो।

५—जो मनुष्य क्षायिक-सम्यक्त्व उत्पन्न करनेसे पहिले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरक आयुका वन्ध करले, वह क्षायिक-सम्यक्त्व सहित पहिले नरकमें उत्पन्न होता है।

६—देव गतिमें नपुंसक वेद नहीं होता।

७—देव गतिमें पर्याप्तके तो ३ शुभ लेश्या होती हैं और अपर्याप्तके भी ३ शुभ लेश्या होती हैं, किन्तु छोटे देवोंमें (भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी) अपर्याप्तके ३ अशुभ लेश्या भी हो सकती हैं, इस कारण देवगतिके सामान्य आलापमें ६ लेश्यायें कही गई हैं।

८—देव गतिमें क्षायिक-सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता। क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर देव बनता है तो वह भी वहां क्षायिक-सम्यग्दृष्टि है।

९—एकेन्द्रिय पर्याप्तमें पहिला गुणस्थान होता है। कोई पंचेन्द्रिय जीव दूसरे गुणस्थानमें मरकर एकेन्द्रियमें उत्पन्न हो तो उसके अपर्याप्त-अवस्था में दूसरा गुणस्थान रह सकता है। इस कारण एकेन्द्रियके सामान्य अलापमें २ गुणस्थान बताये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०—कुअवधिज्ञान संज्ञी पंचेन्द्रियके ही हो सकता है।

११—सासादन गुणस्थानमें मरकर जीव—नरकगति में; सूक्ष्म एकेन्द्रियमें; अग्निकायमें और वायुकाय में उत्पन्न नहीं होता।

१२—तीसरे गुणस्थानमें मरण नहीं होता। इसकारण इसमें मिश्रकाययोग व कर्माण काययोग नहीं होता तथा इसी कारण इस मिश्र गुणस्थानमें अपर्याप्त अवस्था भी नहीं होती।

१३—क्षयोपशम-सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणी पर नहीं चढ़ता है। श्रेणीपर चढ़नेके लिए उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा या क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा।

१४—क्षायिक-सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी व क्षपक श्रेणी दोनोंमें किसी पर चढ़ सकता है किन्तु द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीव केवल उपशम श्रेणीपर ही चढ़ सकता है।

१५—अपर्याप्त अवस्थामें—मनोवल; वचनबल; श्वासोच्छ्वास, मनोयोग; वचनयोग; औदारिक काययोग;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैक्रियक काययोग और आहारक काय योग नहीं होते।

१६—अपर्याप्त अवस्थामें-कुअवधि ज्ञान; मनःपर्यय-ज्ञान; परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, संयमासंयम और मिश्र गुणस्थान नहीं होते।

१७—प्रथमोपशम-सम्यक्त्वमें तो मरण नहीं होता और द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वमें मरण हो तो देव गतिमें उत्पन्न होता है। इस कारण वैक्रियक मिश्र काय योगमें तो उपशम सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम-सम्यक्त्व) हो सकता है। किन्तु, औदारिक मिश्रकाय योगमें उपशम सम्यक्त्व नहीं हो सकता।

१८—आहारक-काययोग-युगल, वेदद्विक (नपुसंक और स्त्री वेद) मनःपर्यय ज्ञान, परिहार विशुद्धि, उपशम सम्यक्त्व इनमें से अगर कोई एक हो तो बांकीके चार नहीं होते, किन्तु द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान हो सकता है और उपशम सम्यक्त्वके साथ वेद युगल (नपुंसक वेद व स्त्रीवेद) भी हो सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणस्थानोंके निमित्तोंका विवरण

७—संज्वलनके मन्द उदय सहित प्रत्याख्यानावरणके क्षयोपशमके निमित्तसे होता है।

६—प्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमित्तसे होता है।

५—अप्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमित्तसे होता है।

४—दर्शनमोहके उपशम, क्षयोपशम, या क्षयके निमित्तसे होता है।

३—सम्यग्मिथ्यात्वनामक दर्शनमोहके उदयके निमित्तसे होता है।

२- दर्शन मोहकी अपेक्षा पारिणामिकताके निमित्तसे होता है।

१—मिथ्यात्व नामक दर्शन मोहके उदयके निमित्तसे होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है।

१०. चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता हैं।

९. चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियोंके उपशमनके निमित्त से होता है।

८. चारित्रमोहनीयके उपशमन के परिणामके निमित्तसे होता है।

उपशम श्रेणी— के गुणस्थान

१४. योगके अभावके निमित्तसे होता है।

१३. घातिया कर्मोंके क्षय हो जाने पर योगके सद्भावके निमित्तसे होता है।

१२. चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियोंके क्षयके निमित्तसे होता है।

१०. चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके क्षयके निमित्तसे होता है।

९. चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियों के क्षपणके निमित्तसे होता है।

८. चारित्रमोहनीयके क्षपणके परिणामके निमित्तसे होता है।

क्षपक श्रेणी— के गुणस्थान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लघु जीवस्थानचर्चा (छब्बीसठाणा) की संदृष्टियोंके आद्य ज्ञातव्य

१—इसके नक्शोंमें शीर्षक वाले स्थानके आधारमें २६ स्थानोंको घटित करना चाहिये।

२—इन नक्शोंमें केवल सामान्यालापका वर्णन है, सो उस स्थानमें अधिकसे अधिक जो हो उसका निरूपण किया गया है।

३—प्रवचनामें या नक्शोंमें जहाँ जहाँ पहिली व बादकी संख्याके बीच डेस (—) का चिन्ह लगा हो वहाँ पहिली व वादकी तथा बीचकी संख्यावोंके तत्त्व सब या यथा सम्भव लगाना चाहिये।

४—जहाँ अल्पविराम (,) लगाकर संख्यायें लिखी हैं वहाँ वे ही लेना चाहिये बीचकी संख्या नहीं लेना।

५—नक्शोंमें अर्द्ध विराम (;) लगाकर जहाँ अनेक संख्या लिखी हों उनको भिन्न-भिन्न अपेक्षासे घटित करना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवस्थानोंकी प्रवाचना

नोट—इन स्थानोंके नामके ऊपर जो अङ्क लिखें है, उस स्थानमें कितने गुणस्थान हैं इसके सूचक हैं। ⌣ इस निशानका अर्थ सिद्ध जानना।

गुण-स्थान १४

१. मिथ्यात्व; २. सासादन सम्यक्त्व; ३. मिश्र सम्यक्त्व (सम्यग्मिथ्यात्व); ४. अविरत-सम्यक्त्व; ५. देशविरत; ६. प्रमत्तविरत; ७. अप्रमत्तविरत; ८. अपूर्वकरण ९. अनिवृत्तिकरण; १०. सूक्ष्मसाम्पराय; ११. उपशान्त-मोह; १२. क्षीणमोह; १३. सयोग केवली; १४. अयोग केवली।

जीव-समास १४

(गुणस्थान १) (१-२)

१. बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त; २. बादर एकेन्द्रिय अप-
(१) (१)
र्याप्त; ३. सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त, ४. सूक्ष्म एकेन्द्रिय अप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[१] [१-२]
र्याप्त; ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त; ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त; ७. त्रीन्द्रिय
[१] [१-२] [१]
पर्याप्त; ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त; ९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त;
[१-२] [१]
१०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त; ११. असंज्ञी-पंचेद्रिय-पर्याप्त;
[१-२] (१-१४)
१२. असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त; १३. संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त;
[१,२,४,६,१३]
१४. संज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ।

पर्याप्ति ६

१. आहारपर्याप्ति; २. शरीर-पर्याप्ति; ३. इन्द्रिय-पर्याप्ति; ४. श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति; ५. भाषा-पर्याप्ति; ६. मनः पर्याप्ति ।

प्राण १०

[१-१२] [१-१२] [१-१२]
१. स्पर्शनेन्द्रिय ; २. रसनेन्द्रिय ; ३. घ्राणेन्द्रिय ;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[१-१२] [१-१२] [१-१२] [१-१३]
४. चक्षुरिन्द्रिय; ५. कर्णेन्द्रिय; ६. मनोबल; ७. वचन-
[१-१३] [१-१४] [१-१३]
बल; ८. कायबल; ९. आयु; और १०. श्वासोच्छ्वास।

संज्ञा ४

[१-६] [१-८] [१-९]
१. आहारसंज्ञा; २. भयसंज्ञा; ३. मैथुनसंज्ञा;
[१-१०]
४. परिग्रहसंज्ञा।

गति ४, गति-मार्गणा ५

[१-४] [१-५] [१-१४]
१. नरक गति, २. तिर्यञ्चगति, ३. मनुष्यगति,
[१-४] [० (सिद्ध)]
४. देव गति, ५. गतिरहित (सिद्ध-गति)।

इन्द्रिय जाति ५, इन्द्रिय-जाति-मार्गणा ६

[१-२] [१-२] [१-२]
१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतु-
[१-२] [१-१४] [० (सिद्ध)]
रिन्द्रिय, ५. पंचेन्द्रिय, ६. इन्द्रियरहित (सिद्ध)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काय ६, काय मार्गणा ७

[१-२] [१-२] [१]
१. पृथ्वी काय, २. जलकाय, ३. अग्निकाय, ४.
[१] [१-२] [१-१४]
वायु काय, ५. वनस्पति काय, ६. त्रसकाय, ७.
[० (सिद्ध)]
कायरहित ।

योग १५- योग-मार्गणा १६

[१-१३] [१-१२] [१-१२]
१. सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनो-
[१-१३] [१-१३] [१-१२]
योग, ४. अनुभयमनोयोग. ५. सत्यबचनयोग, ६. असत्य-
[१-१२] [१-१३]
बचनयोग, ७. उभयबचनयोग, ८. अनुभयबचनयोग,
[१-१३] [१,२,४,१३]
९. औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग,
[१-४] [१,२,४]
११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रयिकमिश्रकाययोग, १३,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[६] [६]
आहारक काययोग, १४. आहारकमिश्रकाययोग, १५. कार्मा-
[१,२,४,१३] [१४ और ०]
णकाययोग, और १६. योग-रहित ।

वेद ३, वेद मार्गणा ४

[१-९] [१-९] [१-९]
१. पुरूषवेद , २. स्त्रीवेद , ३. नपुंसकवेद , ४.
[९-१४, ०]
अपगतवेद ।

कषाय २५, कषाय-मार्गणा २६

←————————[१-२]————————→
१-४. अनंनुवन्धी- क्रोध, मान, मान, माया, लोभ ।
[१-४] अथवा [२-४]
५-८. अप्रत्याख्यानाबरण-क्रोध, मान माया, लोभ ।
[१-४] अथवा [५]
९-१२. प्रयाख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ
[१-१०] व [६-९] [६-१०]
१३-१६. संज्वलन-क्रोध , मान , माया , लोभ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

←————[१-८]————→

१७. हास्य- १८. रति, १९. अरति, २०. शोक, २१.
[१-८] [१-९] [१-९]

भय, २२. जुगुप्सा, २३. पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद,
[१-९] [११-१४ और ०]

२५. नपुंसक वेद, २६. कषाय-रहित ।

ज्ञान ५, ज्ञान-मार्गणा ८

[४-१२] [४-१२] [४-१२]

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनः-
[६-१२] [१३,१४ और ०] [१-३] [१-३]

पर्ययज्ञान, ५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान;
[१-३]

८. कुअवधिज्ञान ।।

संयम ५; संयम-मार्गणा ८

[६-९] [६-९] [६-७]

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहार विशुद्धि,
[१०] [११-१४] [१-४]

४. सूक्ष्मसाम्पराय, ५. यथाख्यातचारित्र, ६. असंयम,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[५] [० सिद्ध]

७. संयमासंयम, ८. असंयम, संयम, संयमासंयम इन तीनोंसे रहित।

दर्शन ४, दर्शन मार्गणा ४

[१-१२] [१-१२] [४-१२]

१. चक्षुदर्शन, २. अचक्षुदर्शन, ३. अवधिदर्शन,

[१३,१४,०]

४. केवलदर्शन।

लेश्या ६, लेश्या-मार्गणा ७

[१-४] [१-४] [१-४]

१. कृष्णलेश्या, २. नीललेश्या, ३. कापोतलेश्या,

[१-७] [१-७] [१-१३]

४. पीत-लेश्या, ५. पद्मलेश्या; ६. शुक्ललेश्या, ७.

[१४ और ०]

लेश्यारहित।

भव्यत्वय-मार्गणा ३

[१-१४] [१] [०]

१. भव्य, २. अभव्य, ३. अनुभय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त्व ३, सम्यक्त्व-मार्गणा ६

[४-११]   [४-७]
१. औपशमिक, २. क्षायोपशमिक (वेदक), ३.
[४-१४ और ०]   [१]   [२]   [३]
क्षायिक-सम्यक्त्व, ४. मिथ्यात्व, ५. सासादन, मिश्र
(सम्यग्मिथ्यात्व)।

संज्ञी-मार्गणा ३

[१-१२]   [१-२]   [१३,१४ और ०]
१. संज्ञी, २. असंज्ञी, ३. अनुभय। (न संज्ञी और न
असंज्ञी)।

आहारक-मार्गणा २

[१-१३]   [१,२,४,१३,१४ और ०]
१. आहारक, २. अनाहारक।

उपयोग २

[१-१२]
१. ज्ञानोपयोग, २. दर्शनोपयोग। (a) क्रमशः (b)
[१३,१४ और ०]
युगपत्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान १६

(a) आर्तध्यान ४, (b) रौद्रध्यान ४, (c) धर्म्यध्यान ४, (d) शुक्लध्यान ४।

[१-६] [१-६]
(a) आर्तध्यान ४—१. इष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज,
[१-६] [१-५]
३. वेदनाप्रभव, ४. निदान।
[१-५] [१-५] [१-५]
(b) रौद्रध्यान ४—५ हिंसानन्द, ६. मृषानन्द, ७. चौर्या-
[१-५]
नन्द, ८. विषयसंरक्षणानन्द।
[३-७]या[४-७] [४-७]
(c) धर्म-ध्यान ४—९ आज्ञाविचय, १०. अपायविचय,
[५-७]या[४-७] [६-७]
११. विपाकविचय, १२. संस्थान-
या [१-७]
विचय।
[८-११½]
(d) शुक्लध्यान ४.—१३. पृथक्त्ववितर्कवीचार, १४. एक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[१२] [१३]
त्ववितर्क-अवीचार, १५. सूक्ष्म क्रिया
[१४]
प्रतिपाती, १६. व्युपरत क्रिया निवृत्ति।

आश्रव ५७

(१) मिथ्यात्व ५, (२) अविरति १२, (३) कषाय २५, (४) योग १५।

[१] [१]
मिथ्यात्व ५—(१) एकान्तमिथ्यात्व, (२) विपरीत-
[१]
मिथ्यात्व, (३) संशय मिथ्यात्व, (४)
[१] [१]
विनय मिथ्यात्व, (५। अज्ञानमिथ्यात्व।

(२) अविरति १२—(a) काय-अविरति —६ (d) विषय-अविरति—६ ।

[१-५]
(२) कायअविरति ६—(६) पृथ्वीकाय-अविरति, (७) जल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[१-५] [१-५]
काय-अवरतिं (८) अग्निकाय-अविरति,
[१-५]
(९) वायुकाय-अविरति, (१०) वन-
[१-५] [१-४]
स्पतिकाय-अविरति, (११) त्रसकाय-
अविरति।

[१-५]
(d) विषयअविरति ६—(१२) स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति,
[१-५]
(१३) रसनेन्द्रियविषय (१) अविरति,
[१-५]
(१४) घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति
[१-५]
(१५) चक्षुरिन्द्रिय (१६) विषय-अविरति,
[१-५]
कर्णेन्द्रियविषय-अविरति, (१७)
[१-५]
मनो-विषय-अविरति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) कषाय २५—इनका वर्णन कषायमार्गणा में हो चुका है ।

(४) योग १५—इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है ।

भाव ५३

२

(a) औपशमिक२ (b) क्षायिक—९, (c) क्षायोपशमिक—१८: (d) औदयिक—२१, (e) पारिणामिक—३ ।

[४-११]

a) औपशमिक भाव २—(१) औपशमिक सम्यक्त्व,

[८-११]

(२) औपशमिक चारित्र,

[१३,१४ और सिद्ध] [१३, १४

(b) क्षायिक भाव ९—(३) क्षायिक ज्ञान, (४) क्षायिक

और सिद्ध] [१३,१४] [१३,१४]

दर्शन (५) क्षायिकदान, (६) क्षायिक

[१३,१४] [१३,१४]

लाभ, (७) क्षायिक भोग, (८) क्षायि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[१३,१४,सिद्ध] (४-१४,
उपभोग, (९) क्षायिकवीर्य, (१०) क्षयिक
सिद्ध) (८-१४,सिद्ध)
सम्यकत्व, (११) क्षायिक चारित्र।

(४-१२)
(d) क्षायोपशमिक भाव १८—(१२) ज्ञान—४ मतिज्ञान
(४-१२) (४-१२)
श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः
(६-१२)
पर्ययज्ञान।

(१-३) (१-३) (१-३)
(१६-१८)—अज्ञान ३—कुमति; कुश्रुत, कुअवधि।
(१-१२) (१-१२)
(१९-२१)—दर्शन ३—चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि-
(४-१२)
दर्शन।

——————(१-१२)————
(२२-२६)—लब्धि ५—क्षायोपशमिक-दान, लाभ, भोग,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१-१२) (१-१२)
उपभोग, वीर्य ।

(४-७) (६-७)
(२७)---क्षायोपशमिकसम्यक्त्व, (२८) क्षायोपशमिक-
(५)
चारित्र, (२९) संयमासंयम ।

(१-४) (१-५)
(d) औदयिक-भाव-२१-गति ४ (३०) -नरक, (३१) तिर्यञ्च,
(१-१४) (१-४)
(३२)-मनुष्य, (३३)-देव ।

(१-९) (१-९) (१-९) (१-१०)
कषाय ४ (३४) —क्रोध, (३५) मान, (३६) माया, (३७) लोभ
(१-९) (१-९) (१-९)
लिङ्ग ३--(३८) पुरुषवेद, (३९) स्त्रीवेद, (४०) नपुंसक वेद ।
(१) (१-१२) (१-४)
(४१) मिथ्यादर्शन, (४२) अज्ञान; ४३—असंयम,
(१-१४)
४४—असिद्धत्व ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१-४) (१-४) (१-४)
लेश्या ६—(४५) कृष्ण, (४६) नील, (४७) कापोत, (४८)
(१-७) (१-७) (१-१३)
पीत, (४९) पद्म, (५०) शुक्ल।
(१-१४,०) (१-१४)
( ) पारिणामिक-भाव ३—(५१) जीवत्व, (५२) भव्यत्व,
(१)
(५३) अभव्यत्व।

२४—अवगाहना

घनाङ्गुलके असंख्यातवें भागसे लेकर
१००० योजन तक।

२५—जाति

जाति ८४ लाख।

२६—कुल

२६. कुल १९७॥ लाख कोटि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवस्थानचर्चा के विषयों का नक्शों द्वारा विवरण प्रारम्भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यात्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित विना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	अतीन्द्रिय विना
कायमार्गणा	६	अकाय विना
योगमार्गणा	१३	म०४व०४औ०२का०वै२
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यात्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	—	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	—	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र४
आश्रव	५५	अहारक योग २ बिना
भाव	३४	क्षायोपश० १०, और २१ पारि०३
अवगाहना	—	घना० असं भागसे १००० यो
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासादन गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सासादन
जीवसमास	७	सं. प. प १अपर्याप्त ६
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	४	जल, पृथ्वी, वनस्पति, त्रसकाय,
योगमार्गणा	१३	मन ४ व० ४ औ २ वै० २ का०१
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुति कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासादन गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	सासादन
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आति ४, रौद्र ४
आश्रव	५०	मिथ्वात्व ५ अहारक योंग २ बिना
भाव	३२	
अवगाहना		घना० असं भाग से १००० योजन
योनि		५६ लाख
कुल		१८७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र) गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुण स्थान	१	मिश्र
जीवसमास	१	सं० पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१०	म० ४ व० ४ औ १ वै १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२१	अकषाय व अनन्तानुबंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत, कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र) गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	सादन मिश्र
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	९	आर्त ४ रौ० ४ धर्म १
आश्रव	४३	योग २० कसाप २१ अवरति १२
भाव	३२	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में

स्थ	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अविरत सम्वक्त्व
जीवसमास	२	सं पचेन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	६	सव
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१३	म० ४ व ४ औ २ वै २ का १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री न०
कषायमार्गणा	२१	अकषाय, अनन्तानुवंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुत, अवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम, क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौ० ४ धर्म २
आश्रव	४६	
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशविरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देश विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्य, तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	६	म० ४ व० ४ औ १
वेदमार्गणा	३	पु०, स्त्री, नपुंसक
कषायमार्गणा	१७	प्र० ४, सं ४ हा० ६
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुत, अवधि
संयममार्गणा	१	संयमासंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशव्रित गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम, क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौ ४ धर्म ३
आश्रव	३७	योग ६ कषाय १७ अवरति ११
भाव	३१	
अवगाहना		
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	प्रमत्त विरण
जीवसमास	२	सं० पचेन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ औ १ आ० २
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४ हास्य आदि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	३	सामा०, छेदो०, परिहार विशुद्धि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशय, क्षायोग, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्तं ३ धर्म ४
आश्रव	२४	योग ११ कषाय १३
भाव	३१	
अवगाहना		
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोठि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अप्रमत्त विरत
जीवसमास	१	सं० पंचेन्द्रिय प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	म० ४ वच० ४ औदा० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०'
कषायमार्गणा	१३	सञ्ज्वलन ४, हास्य आदि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	३	सामा० छेदो० परि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रमत्त वित्त गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	४	धर्म ४
आश्रव	२२	योग ६, कषाय १३
भाव	३१	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्वकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अपूर्वकरण
जीवसमास	१	सं० पं० पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	म० ४ व० ४ औ० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	१३	सज्वलन ४ हास्य आदि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	२	सामा० छेदो०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्वकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	सक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशय, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्वत्व वितर्क वीचार (शुक्ल)
आश्रब	२२	योग ९ कषाय १३
भाव	२६	
अवगाहना	२८	३॥ हाथ से ५२५ धनस तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनिवृत्ति गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अनिवृत्तिकरण
जीवसमास	१	सं० प० पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	मैथुन, परिग्रह
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	मन ४ व० ४ औ० १
वेदमार्गणा	२	सब
कषायमार्गणा	७	संज्वलन ४ पु० स्त्री० न०
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	२	सामा० छेदो०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनिवृत्ति गुणस्थान में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्ष, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यकत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशम क्षायक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	रअहरक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्ल)
आश्रव	१६	योग ६ कषाय ७
भाव	२६	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
अवगाहना		
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सूक्ष्मसाम्पराय
जीवसमास	१	सं० प० पर्याय०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	परिग्रह
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	मन ४ व० ४ औ० १
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	सज्वलन लोभ
ज्ञान मार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशम, क्षायिक
संज्ञिप्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्ल)
आश्रव	१०	योग ६ कषाय १
भाव	२३	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		११ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपशांतमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	उपशांतमोह
जीवसमास	१	सं० प० पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियमार्गणा	१	पंचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	म० ४, व० ४, औ० १
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि मनःपर्यय
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपशांतमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशम क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार
आश्रव	६	योग ६
भाव	२१	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षीणमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	क्षीणमोह
जीवसमास	१	सं० प० पर्याय
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा		अपगत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	६	मन० ४, व०, ४, औ० १
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	केवल ज्ञान बिना
संयम मार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षीणमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्र…
ध्यान	२	
आश्रव	६	योगके …
भाव	२०	
अवगाहना		३।। हाथसे ५२५ धनुषतक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाखकोटि

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी
पुस्तक नं. ....
दिनांक ....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सयोगकेवली
जीवसमास	२	सं० प० प० अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	४	वचन, काय, आयु, स्वासोछ्वास,
संज्ञा		अपगत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	७	मन २, वच० २, औ० २, का १
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवलज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्यमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती
आश्रव	७	योग ७
भाव	१४	क्षायिक ९ औदा० ३ पारिणा० २
अवगाहना		३।। हाथसे ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अयोगकेवली
जीवसमास	१	सं० प० प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१	आयु
संज्ञा		अपगत संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोग-केवलीगुणस्थान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	ज्ञयिक सम्यक्त्व ।
सज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृति (शुक्ल)
आश्रव	+	अतीत आश्रय ।
भाव	१३	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुषतक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतीत गुणस्थान

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतीतगुणस्थान

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	+	ध्यान रहित
आश्रव	+	आश्रवरहित
भाव	५	क्षायिक ४, जीवत्व १
अवगाहना	+	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि	+	
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरकगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि० सा० मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं० प० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	नरक गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	म० ४, व० ४, वै० २, का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय, केवल, ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरकगति में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षुअचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	कृष्णनील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमश
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	५१	
भाव	३३	
अवगाहना		
योनि		४ लाख
कुल		२५ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिर्यंचगतिमें

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	
जीवसनास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	११	मन ४ व० ४ औ० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसक
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय केबल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम, सयमांसंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिर्यंचगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्य ३
आश्रव	५३	
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		६२ लाख
कुल		१३४।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुष्यगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	२	संज्ञी प० प० ऊ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१०	
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनोंसे रहित बिन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुष्यगति में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५५	वै० २ विना
भाव	५०	औ० गति ३ विना
अवगाहना	—	
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोठि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि० सा० मिश्र अ० सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं० प० प० अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	त्रस
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	देव
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ वै० २ का० १
वेदमार्गणा	२	पु०, स्त्री,०
कषायमार्गणा	२४	नँपुसेक व अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	६	मन:पर्यय केवल ज्ञान। विना
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवगति में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	५२	औ० २ अहा० २ नपुसेक बिना
भाव	३७	
अवगाहना		१ हाथ से १५ धनुष तक
योनि		४ लाख
कुल		२६ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गतिरहित में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	७	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गतिरहित में

स्थान	स मान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवलज्ञान
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	+	अतीत ध्यान
आश्रव	+	आश्रवरहित
भाव	५	
अवगाहना	+	३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योन	+	×
कुल		×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकेन्द्रियगति में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	४	वादरएकेंद्रिय प०अ०सू० प०अ०
पर्याप्ति	४	आ०, शरीर, इन्द्रिय स्वासोच्छ्वास
प्राण	४	स्पर्शन काय स्वासोच्छ्वास आय
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेंद्रिय
कायमार्गणा	५	त्रस काय विना
योगमार्गणा	३	औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकेन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील का पोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		५२ लाख
कुल		६७ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्विन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुण स्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	२	द्विन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	५	म० विना०
प्राण	६	स्पर्श रसना काय व० स्व० आय
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	निर्पंच
इन्द्रियजातिमा०	१	द्विइन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन,१ औ०, २ का०१
वेदमार्गणा	१	नपुसंक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वीन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४०	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		२ लाख
कुल		७ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रीन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	२	पंचेंद्रिय प० अ०
पर्याप्ति	५	मनविना
प्राण	७	चक्षुकर्ण मनबल विना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	त्रीन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	४	अनुमय वचन १ औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुसंक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रीन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४१	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		२ लाख
कुल		७ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुरिन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	२	चतुरिन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	५	मनविना
प्राण	८	कर्ण मनो बल विना
संज्ञा	४	सब
यइतिमार्गणा	१	तिर्यंच
क द्रियजातिमा०	१	चतुरिन्द्रिय
गकयमार्गणा	१	त्रस
ग्रवेगमार्गणा	४	अनुभय वचन औ० २ का० १
यदमार्गणा	१	नपुंसक
संषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
ममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुरिन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्ष, अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्णनील कापोत
भव्यक्त्यमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्रमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४२	
भाव	२५	
अवगाहना		
योनि		२ लाख
कुल		६ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंज्ञी पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	२	असंज्ञी पचेन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	५	मन विना
प्राण	६	मन बल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियमार्गणा	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन १ औ० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुसंक
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंज्ञी पंचेन्द्रिय

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४५	
भाव	२५	
अवगाहना		
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्ञी पंचेन्द्रिय

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	२	समी पचेन्द्रिय प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	व० रहित
गतिमार्गण	४	गति रहित बिना
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञान मार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्ञी पचेन्द्रिय

स्थान	सामान्या-लाप	सक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१६	सब
आश्रब	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंज्ञी पंचेन्द्रिय

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	४	
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	व० रहित
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य-अभव्व
सम्यक्त्वमा०	१	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी असंज्ञी अनुमय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंन्द्रिय रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रिय रहित में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञिप्वमा०	१	अनुभव
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	०	अतीत ध्यान
आश्रव	०	आश्रव रहित
भाव	५	
अवगाहना		
योनि		×
कुल		×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी कायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	४	
पर्याप्ति	४	मन भाषा विना
प्राण	४	स्पर्श, काय स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इंद्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	पृथ्वीकाय
योगमार्गणा	३	औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी कायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः.
ध्यान	८	आर्ति ४, रौद्र ४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		७ लाख
कुल		७ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलकाय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वादर सूक्ष्म प० अप०
पर्याप्ति	४	मन भाषा बिना
प्राण	४	स्पर्शनकाय स्वासो० आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	जल काय
योगमार्गणा	३	औदा २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलकाय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सासादन
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		४ लाख
कुल		२५ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्निकायकि में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्तविवरण
गुणस्थान	१	मि०
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय बा०प०अ०सू० प०अ०
पर्याप्ति	४	भाषा मन विना
प्राण	४	स्पर्शन काय स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तीर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	अग्निकाय
योगमार्गणा	३	औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्निकायिक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मि०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		७ लाख
कुल		३ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायुकाय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वादर सू०केप०अ०अप०
पर्याप्ति	४	मन भापा विना
प्राण	४	स्पर्शन काय स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सव
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इंद्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	वायुकाय
योगमार्गणा	३	औदा० २ कार्मा० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयम मार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायुकाय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्वात्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		७ लाख
कुल		७ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनस्पति कायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	४	
पर्याप्ति	४	भाषा मन विना
प्राण	४	स्पर्शन काय स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	वनस्पतिकाय
योगमार्गणा	३	औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनस्पति कायिक में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	
भाव	२४	
अवगाहना		
योनि		१० लाख
कुल		२८ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रस कायिक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सव
जीवसमास	१०	एकेन्द्रिय के ४ विना
पर्याप्ति	६	सव
प्राण	१०	सव
संज्ञा	४	सव व रहित
गतिमार्गणा	४	सव
इन्द्रियजातिमा०	४	एकेन्द्रिय व गति रहित विना
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१६	सव
वेदमार्गणा	४	सव
कषायमार्गणा	२६	सव
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रस कायिक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य-अभव्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी असंज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		३२ लाख
कुल		१३०॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायरहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्तविवरण
गुणस्थान	०	अतीत
जीवसमास	०	अतीत
पर्याप्ति	०	अतीत
प्राण	०	अतीत
सज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	१	गतिरहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काय रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान		अतीत
आश्रव		आश्रवरहित
भाव	५	क्षायिक ४ परिणा० १
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	×	
कुल	×	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य मनोयोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	अयोग केवली बिना
जीवस्थान	१	सं० पं प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमा०	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमा०	१	त्रस
योगमा०	१	सत्य मनो योग
वेदमा०	४	सब
कषायमा०	२६	सब
ज्ञान मा०	८	सब
संयममा०	७	तीनों रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य मनोयोग में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	व्युपरतक्रिया निवृत्ति बिना
आश्रव	४३	
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६ः। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असत्य मनोयोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	सयोग व अयोग केवली विना
जीवसमास	१	सं पं प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	असत्यमनोयोग
वेदमार्गणा	२	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान विना
संयममार्गणा	७	तीनो से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असत्य मनोयोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	
आश्रव	४३	
भाव	४६	क्षायिक ७ विना
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य बचनयोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	अयोग केवली विना
जीवसमास	१	सं पं० प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	ब रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियमार्गणा	१	श्रीद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	सत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य वचनयोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	व्युपरत बिना
आश्रव	४३	
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असत्तय बचनयोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	सयोग केवली अयोग केवली विना
जीवसमास	१	स पं० प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पँचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	असत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान विना
संयममार्गणा	७	तीनो से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असत्य वचनयोग

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	आर्त ४ रौद्र ४, ध० ४, शु० २ ।
आश्रव	४३	योग के १४ बिना
भाव	४६	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभय वचन योग

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	अयोग केवली बिना
जीवसमास	५	पर्याप्त के
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	४	एकेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	अनुभय वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभय वचनयोग

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१५	आ० ४, रौद्र ४ ध० ४ शु० ३।
आश्रव	४३	योग के १४ विना
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		३२ लाख
कुल		१३०॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औदारिक काय योग

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	अयोग केवलि विना
जीवसमास	७	पर्याप्तके
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	२	तिर्यंच मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१	औदारिक काययोग
बेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनो से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औदारिक काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेस्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	सब
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	आ० ४, रौ ४, धर्म ४, शुक्ल ३
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	५१	नरक देव गति बिना
अवगाहना		
योनि		७६ लाख
कुल		१४६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औदारिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि० सा० अवरति सयोग केवली
जीवसमास	७	सिर्फ अपर्याप्त अवस्था
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	७	मन वच० स्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सवव रहित
गतिमार्गणा	२	मनुष्य तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित विना
योगमार्गणा	१	औदरिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय कुअवधि विना
संयममार्गणा	२	असंयम यथाख्यान चरित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औदारिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	४	उपशम मिश्र बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
अहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २ शुक्ल १
आश्रव	४३	१४ योग बिना
भाव	४५	उमशम १ क्षायोप ३ औ४ बिना
अवगाहना		
योनि		७६ लाख
कुल		१४६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैक्रायिक काय योग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि० सा० मि० अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	१	सञ्ज्ञी पं प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमा०	२	नरक, देव
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	वैंक्रयिक काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	कषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय व केवल विना
संयममार्गणा	१	असयंम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैक्रायिक काय योग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ विना
भाव	३९	
अवगाहना		१ हाथ से ५०० धनुष तक
योनि		८ लाख
कुल		५९ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैक्रायिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि० सा० अवरति सम्यत्व
जीवसनास	१	सं पं० अपर्या०
पर्याप्ति	६	सव
प्राण	७	मनः वचन स्वाच्छ्वास विना
संज्ञा	४	सव
गतिमार्गणा	२	नरक देव
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	वैक्रयिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत विना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	५	
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैक्रियक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्य मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		८ लाख
कुल		५१ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुण स्थान	१	मत्त विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पं प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	संज्ञा रहित बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	अहारक काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुष वेद
कषायमार्गणा	११	सं० ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुति, अवधि
संयममार्गणा	२	सामा० छेदो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक काययोग में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	२८	
अवगाहना	+	
योन	+	१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	प्रमत्त विरत
जीवसमास	१	स प० अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	अपर्याप्त अवस्था
प्राण	७	मन, वचन स्वासोच्छ्वास विना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१	अहारक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुष वेद
कषायमार्गणा	११	सज्वलन ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अव०
संयममार्गणा	२	सा० छेदो०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक मिश्र काययोग में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३, धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	१८	
अवगाहना		
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्माण काययोग में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	१, २, ४, १३।
जीवसमास	७	अपर्याप्ति के
पर्याप्ति	६	अपर्याप्त
प्राण	७	मन वचन स्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१	कार्माण काययोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञान मार्गणा	६	मनः पर्यय कुअवधि ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम यथाख्यान चारित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्माण काययोग

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यक्त्यमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	२	सब
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २ शुक्ल १
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	उप० १ क्षायोप ४ बिना
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु व अतीत
संज्ञा	—	अतीत संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य व गति रहित
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय इंद्रिय रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात चा० तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग रहित में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृत्ति व रहित
आश्रव	—	अतीतआश्रव
भाव	१३	क्षायि० ९ औदा० २ पारिणा० २
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	(१-६)
जीवसमास	४	
प्रर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमा०	३	नरक बिना
इंन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमा०	१	त्रस
योगमा०	१५	योग रहित बिना
वैदमा०	१	पुरुष वेद
कषायमा०	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमा०	७	केवल ज्ञान बिना
संयममा०	५	सूक्ष्म, यथा० बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषवेद में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्यमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल के अन्तिम ३ विना
आश्रव	५५	स्त्री नंपु० वद विना
भाव	४३	क्षायिन और २ विना
अवगाहना		संख्यात घनागुल से ३ कोश तक
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्री वेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	(१-९)
जीवस्थान	४	असंज्ञी संज्ञी प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब अतीत विना
गतिमा०	३	नरक गति बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमा०	१	त्रस
योगमा०	१३	अहारक २ योग रहित बिना
वेदमा०	१	स्त्री वेद
कषायमा०	२३	पु० न० विना
ज्ञान मा०	६	मन पर्यय केवली बिना
संयममा०	४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सव
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ३ विना
आश्रव	५२	अहारक २ पु० न० विना
भाव	४२	क्ष० ७ क्षायो० १ औदा० ३ विना
अवगाहना		
योनि		२२ लाख
कुल		१८॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसकवेद में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	(१-९)
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	देव विना
इन्द्रियमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१२	अहारक २ योग रहित विना
वेदमार्गणा	१	नपुसंक वेद
कषायमार्गणा	२३	पु० स्त्री० अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नपुंसकवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य-अभव्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ३ विना
आश्रव	५३	अहारक २ पु० न० विना
भाव	४२	
अवगाहना		
योनि		८० लाख
कुल		१७१॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपगतवेद में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	९ से १४,०
जीवसमास	२	संज्ञी प० अ: व०
पर्याप्ति	६	सब व रहित
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	परिग्रह व संज्ञा रहित
गतिमार्गणा	२	मनु० व रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय व रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व काय रहित
योगमार्गणा	१२	अहारक २ वै२ बिना व रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	४	संज्वलन ४ व रहित
ज्ञानमार्गणा	५	कुज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपगतवेद में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ल व रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	२	उपशम व क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	४०	शुक्ल ४ व रहित
आश्रव	१५	योग ११ कषाय ४ व आश्रवरहित
भाव	३४	
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तानुबंधी क्रोध में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति व रहित बिना
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	अहारक २ योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० नं०
कषायमार्गणा	१३	अनंतान आदि ४ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	३	कु० कु० कु०
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तानुंवधी क्रोध में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु,
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	अनाहरक योग २ बिना
भाव	४३	
अवगाहना	३४	
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तानुबंधी रहित

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्तव
जीवसमास	२	सं पं० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	त्रस
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	सब
योगमार्गणा	१३	अहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रत्याख्याना वरण

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि० सा० बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४, धर्य २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि० ५ बिना
भाव	३९	
अवगाहना		
योनि		३२ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ० और अ० रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देश व्रत
जीवसमास	१	सं वं० प
प्रर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमा०	२	मनुष्य तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमा०	१	त्रस
योगमा०	६	मन ४, वच० ४, औ० १
वेदमा०	३	पु० स्त्री न०
कषायमा०	११	
ज्ञानमा०	३	मति श्रुति अव०
संयममा०	१	सयांमासयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंता वधो और अ० घरण रहित

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पति पद्‌य शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशय कृ० क्षयोपशामिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ३
आश्रव	३७	योग ९ वषाय १७ अवदि ११
भाव	३१	
अवगाहना		
योनि		१८ लाख
कुल		५५॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्वन क्रोध में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुण स्थान	४	६ से ६ तक
जीवसमास	२	
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
सज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	
वेदमार्गणा	४	स्त्री० पु० नं० अपगत
कषायमार्गणा	१०	सज्वलन क्रोध १ हास्यादि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अव० मन०
संयममार्गणा	३	सामा० छेदो० परिहार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहित संज्वलत क्रोध में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	३	पति पद्म शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशय क्षायिक क्षायोपशमक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	
भाव	२९	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्वलन-लोभ में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	६ से १०
जीवसमास	२	
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	
बेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	११	सज्वलन लोभ १ हस्यादि० ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अव० मन ०
संयममार्गणा	४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सज्वलन लोभ में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उप० क्षायोप क्षायो० श०
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	
आश्रव	२४	
भाव	२६	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हास्यादिषट्क में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	१—८
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२०	
ज्ञानमार्गणा	७	केवल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हास्यादिषट्क में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आ० ४, रौ ४, धर्म ४, शुक्ल १
आश्रव	५२	कषाय ५ विना
भाव	५७	सब
अवगाहना	४४	क्षायिक ७ विना
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकसाय में

स्थान	सामा याःलाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	११ से १४ व अतीत
जीवसमास	२	सं० पं प० अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	—	संज्ञा रहित
गतिमार्गणा	२	मनुष्य व गति रहित
इंद्रियजातिमा०	२	पचेन्द्रिय इंद्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रस व काय रहित
योगमार्गणा	११	
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान नहीं
संयममार्गणा	२	यथा०, तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकसाय में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ल व रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	२	उपसम क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	४	शुक्ल ४ व रहित
आश्रव	११	योग ११ वा रहित
भाव	३०	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुस
योनि		१४ लाख व जाति रहित
कुल		१२ लाख कोटि व कुल रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमति ज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि० सा० मिश्र
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१३	अहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१	कुमति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमति कुश्रुत ज्ञान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि० सा० मिश्र
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	अहारक २ योग बिना
भाव	३२	
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१६७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुअवधि ज्ञान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मिथ्यात, सासदन, मिश्र
जींवसमास	१	सं० पं० पं०
पर्याप्ति	६	संज्ञी पं० पर्याप्त
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	सब गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पँचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१०	
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	१	कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुअवधिज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेस्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि० सा० मिश्र
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग "	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५२	योग ५ बिना
भाव	३२	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मति ज्ञान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	४ से १२
जीवसमास	२	संज्ञी पं अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	गतिरहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित विना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	
ज्ञानमार्गणा	१	मतिज्ञान
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गतिज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ विना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ विना
भाव	३८	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	४ से १२
जीवसमास	२	स पं० प०, अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित विना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	
ज्ञान मार्गणा	१	अवधिज्ञान
संयममार्गणा	७	तीनो से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	सब
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम क्षायोप क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ विना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ विना
भाव	३८	
अवगाहना	+	
योन	+	२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनःपर्याय ज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्था	७	६ से १२
जीवसमास	१	सं० प०पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब रहित विना
गतिमा०	१	मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	मन ४ वच ४ औ १
वेदमार्गणा	२	
कषायमार्गणा	११	पु० अपगत
ज्ञानमार्गणा	१	
संयममार्गणा	४	मनः पयर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनः पर्यय ज्ञान में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	द्विती उपशम क्षायोप क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	९	आर्प ३ धर्म ४ शुक्ल २
आश्रव	२०	योग ९ कषाय ११
भाव	२८	
अवगाहना		
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलज्ञान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्तविवरण
गुणस्थान	२	
जीवसमास	२	सं पं पं अ० व रहित
पर्याप्ति	६	सब व रहित
प्राण	४	
संज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य व रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय व रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व रहित
योगमार्गणा	७	
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यान: तीनो से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलज्ञान में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल व रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञिप्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	२	शुक्ल २ व रहित
आश्रव	७	योग ७ वा रहित
भाव	१४	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुस
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामायिक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ९
जीवसमास	२	सं० पं० पं० अ०
प्रर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमा०	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमा०	१	त्रस
योगमा०	११	व
वेदमा०	४	सब
कषायमा०	१३	सज्वलन लोभ ४ हस्यादि० ९
ज्ञानमा०	४	मति श्रुति अव० मन; पवि
संयममा०	१	सामायिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामायिकमे

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उप० क्षायोप क्षायो० श०
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	योग ११ कषाय १३
भाव	३३	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिहारविसुद्धि में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	(७-६)
जीवसमास	६	सं वं० प
पर्याप्ति	१०	सब
प्राण	४	सब
संज्ञा	१	सब
गतिमार्गणा	४	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	९	त्रस
योगमार्गणा	१	मन ४, वच० ४, औ० १
वेदमार्गणा	११	पुरुष
कषायमार्गणा	३	सज्वल ४ हस्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	१	मति श्रुति अवधि
संयममार्गणा		परिहार विशुद्धी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिहार विशुद्धि में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	३	पीत पद्य शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्य ४
आश्रव	२०	योग ९ वषाय ११
भाव	२७	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुश
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुक्ष्मसाम्पराय संयम में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सूक्ष्म साम्पराय
जीवसमास	१	सं पं स०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	प्राण
संज्ञा	१	परिग्रह
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इन्द्रियमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	६	मन ४ वचन० औ० १
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	सज्वलन सूक्ष्म लोभ
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुक अवधि मनपर्पप
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्मसाम्परायसंयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्त्रमा०	२	उपशय क्षामिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथत्त्व वितर्क विचार
आश्रव	१०	योग ६ कषाय १
भाव	२३	
अवगाहना	+	३।। हाथ से ५२५ धनुष तक
योन	+	१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यथाख्यातसंयम में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	११ १४
जीवसमास	२	सं० पं प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य
इंद्रियजातिमा०	१	पंचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	वै २ अहा० २ विना
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञान मार्गणा	५	शुभ ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यथाख्यान में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा० "	४	सव
लेस्यामा०	२	शुक्ल लेश्या रहित
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	उपशम क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सव
उपयोग "	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	४	शुक्ल ४
आश्रव	११	योग ११
भाव	२६	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कूल		१२ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	१-४
जीवसनास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सव
प्राण	१०	सव
संज्ञा	४	सव
गतिमार्गणा	४	गति व रहित बिना
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१३	अहारक २ विना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयमग्रसंयम में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्यमा०	२	भव्य-अभव्व
सम्यक्त्वमा०	६	सव
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	५५	अहरक योग २ बिना
भाव	४१	
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सयमासंयम में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्तविवरण
गुणस्थान	१	देव व्रत
जीवसमास	१	स पं० प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्य तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	९	मन० ४ वच० ४ औ१
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० नं०
कषायमार्गणा	१७	
ज्ञानमार्गणा	१	मति श्रुत अवधि
संयममार्गणा	१	सयमासयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयमासंयम में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपसम क्षयोप क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ३
आश्रव	३७	
भाव	३१	
अवगाहना		
योनि		१८ लाख
कुल		५५॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स० अ० स० तीनोंसे रहित में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान		अतीत
जीवसमास		अतीत
पर्याप्ति		अतीत
प्राण		अतीत
संज्ञा		अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रीय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनो से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ० स० सं० तीनो से रहित में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन विना
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिन
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	×	अतीत
आश्रव	×	आश्रव रहित
भाव	५	
अवगाहना		
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्षुदर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२
जीवसमास	६	
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	२	४ इन्द्रिय व ५ इन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१६	योग रहित विना
बेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान विना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहति विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्षुदर्शन में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	चक्षु,
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ विना
आश्रव	५७	सब
भाव	४४	
अवगाहना		
योनि		२८ लाख
कुल		११५ः। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचक्षुदर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२
जीवस्थान	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमा०	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमा०	६	काय रहित विना
योगमा०	१५	योग रहित विना
वेदमा०	४	सब
कषायमा०	२५	कषायरहित विना
ज्ञान मा०	७	केवल-ज्ञान विना
संयममा०	७	तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचक्षुदर्शन में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अचक्षु
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सव
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ विना
आश्रव	५७	सव
भाव	४४	
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिदर्शन में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	९	४ से १२
जीवसमास	२	सं पं० प० अ०
पर्याप्ति	६	सव
प्राण	१०	त्रस
संज्ञा	४	सव व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित विना
वेदमार्गणा	४	सव
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुवधी ४ विना
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अवधि मनः पर्यय
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिदर्शन में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम क्षायोपश क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २विना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ विना
भाव	३९	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाखकोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलदर्शन में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	१३, १४, ०
जीवसमास	२	सं प० पं० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	४	काय वचन स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	+	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनु० व रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय व रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व रहित
योगमार्गणा	७	
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यान, तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलदर्शन में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल व रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुमय
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	२	शुक्ल २ व अतीत
आश्रव	७	योग ७ अतीत
भाव	१४	
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व X
कुल		१२ लाख कोटि व X

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्ण लेश्या में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	१—४
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित विना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ विना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नं०
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित विना
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान विना
सयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृष्ण लेश्या में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	कृष्ण
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४, धर्म्य -२
आश्रव	५५	आहारक २ योग बिना
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		८० लाख
कुल		१७१॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीतलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुण स्थान	७	१ से ७
जीवसमास	२	सं प० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
सज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्य तिर्यंच देव
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नं०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
क्षंयममार्गणा	५	यथाख्यान तीनों से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीतलेश्या में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	पीत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	शुक्ल ४ विना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	
अवगाहना		
योनि		८२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	१-७
जीवसमास	२	स० पं० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्य तिर्यंच देव
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित विना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपु०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	यथा० तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	१	पद्म
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	शुक्ल ४ विना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	
अवगाहना		
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोढि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुक्ललेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्था	१३	१ से १३
जीवसमास	२	सं० प० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमा०	३	मनुष्य तिर्यंच देव
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुक्ललेश्या में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	१	शुक्ल
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१५	व्युपर तक्रिया निवृत्तिविना
आश्रव	५७	सब व अतीत
भाव	४७	
अवगाहना		
योनि		२२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलेश्या में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	सं० प४ प व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु व अतीत
संज्ञा	×	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य व अतीत
इन्द्रियजातिमा०	१	
कायमार्गणा	१	त्रस व अतीत
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यान व तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलेश्या में

थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञिप्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	
आश्रव	+	अतीत
भाव	१३	
अवगाहना		३ ॥ हाथ से ५२५ धनुश
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्यत्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
सञ्ज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	८	तीनों से रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्यत्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१९७ः। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभव्यत्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित विना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१३	अहारक काय २ विना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपु०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय विना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभव्यत्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेस्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यक्त्वमा०	१	अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्वात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४,
आश्रव	५५	अहारक काय २ योग बिना
भाव	३३	
अवगाहना		
योनि		८४ लाख
कुल		१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्य अभव्य अनुभय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान		अतीत
जीवसमास		अतीत
पर्याप्ति		अतीत
प्राण		अतीत
संज्ञा		अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इंद्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञान मार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभय में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यक्त्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	+	अतीत
आश्रव	+	अस्राव रहित
भाव	५	
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुस
योनि		+
कुल		+

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	४ से ७
जीवसमास	१	स पं० प०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१०	मन ४, वच० ४, औ० १ वै० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नं०
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुवंधी ४ विना
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अवधि
संयममार्गणा	४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	प्रथमोपशम सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	शुक्ल ४ विना
आश्रव	४३	
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाखकोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	४ से ११
जीवसमास	२	सं पं० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२	तिर्यंच मनुष्य
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	मन० ४ वच० ४ औ१ कर्माणं १
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुवंधी ४ विना
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अवधि मनः पर्यय
संयममार्गणा	६	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	द्वितीयोपशम
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ३ विना
आश्रव	४४	
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		१८ लाख
कुल		३८ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्तविवरण
गुणस्थान	८	४ से ११
जीवसमास	२	सं० पं प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	११	
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबंधी ४ विना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनपनपर्यय
संयममार्गणा	६	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	उपशम
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ३ विना
आश्रव	४४	योग ११ कषाय २१ अवरति १२
भाव	३६	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६।। लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायोप क्षायिक (वेदक) सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	४ से ७
जीवसमास	२	स० पं० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गहि रहित विना
इन्द्रियजातिमा०	१	पँचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित विना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नं०
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ विना
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुत अवधि मनः पर्यय
संयममार्गणा	५	यथा० तीनों से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायोप वेदक) सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायोप शमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	शुक्ल ४ विना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ विना
भाव	३७	
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	११	४ से १४ व अतीत
जीवसमास	२	सं० प० प० अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	सब व अतीत
इंद्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय व रहित
कायमार्गणा	१	त्रस व रहित
योगमार्गणा	१५	सब व रहित
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधो ४ व रहित
ज्ञानमार्गणा	५	शुभ ज्ञान सब
संयममार्गणा	७	सब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्य-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत सब
ध्यान	१६	
आश्रव	४८	
भाव	४६	
अवगाहना		
योनि		
कुल		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संज्ञित्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२
जीवसमास	२	सं० प० प० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमा०	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेंद्रिय
कायमार्गणा	१	त्रस
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान मार्गणा
संयममार्गणा	७	तीनों रहित बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सञ्ज्ञित्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य-अभव्व
सम्यक्त्वमा०	६	सव
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ विना
आश्रव	५७	रूप
भाव	४६	क्षायिक ७ विना
अवगाहना		
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंज्ञित्व में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि० सा०
जीवसमास	१२	सज्ञी प०प०अ० बिना
पर्याप्ति	५	मन विना
प्राण	६	मनोवल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यंच
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	४	
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नं०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंज्ञित्व मे

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेश्यामा०	३।	कृष्ण नील कापोत
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सासादन
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४५	योग ११ अवरति १ विना
भाव	२७	
अवगाहना		
योनि		६२ लाख
कुल		१३४ ।. लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभय में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान		
जीवस्थान	२	सं० पं० पं० अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	
संज्ञा	×	अतीत
गतिमा०	२	मनुष्य व रहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व रहित
कायमा०	२	त्रस व रहित
गमा०	७	
वेदमा०	१	अपगत
कषायमा०	१	अकषाय
ज्ञान मा०	१	केवल-ज्ञान बिना
संयममा०	२	तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभय में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	२	शुक्ल व रहित
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
अहारकमा०	२	सव
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	२	शुक्ल २ व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व अतीत
भाव	१४	
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व ×
कुल		१२ लाख कोटि व×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	१ से १३
जीवसंनास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इंद्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित विना
कायमार्गणा	६	काय रहित विना
योगमार्गणा	१४	कर्माणा रहित विना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनो से रहित विना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहारक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षिप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित विना
भव्यक्त्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित-मा०	३	सब
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१५	व्युपर तक्रिया निवृत्तिविना
आश्रव	५६	कार्माण योग विना
भाव	५३	सब
अवगाहना		
योनि		८४ लाख कोटि
कुल		१९७॥ लाख कोटि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनहारक में

स्थान	सामान्या-लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	१, २, ४१३, १४, ०
जीवसमास	८	अपर्याप्त ७ प १
पर्याप्ति	६	सव व अतीत
प्राण	७	
संज्ञा	४	सव व अतीत
गतिमार्गणा	५	सव
इन्द्रियमार्गणा	६	सव
कायमार्गणा	७	सव
योगमार्गणा	१	कार्माणव रहित
वेदमार्गणा	४	सव
कषायमार्गणा	२६	सव
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय कुवधि ज्ञान विना
संयममार्गणा	३	असंयम यथा० तीनों से रहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनहारक में

स्थान	सामान्यालाप	संक्षेप्त विवरण
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यक्त्वमा०	२	सब
सम्यक्त्वमा०	५	मिश्र बिना
संज्ञित्वमा०	२	सब
अहारकमा०	१	अनाहरक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	१२	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २ शुक्ल २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	उप० १ क्षायोप ४ बिना
अवगाहना	+	
योन	+	८४ लाख व X
कुल		१९७॥ लाख कोटि व X

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

— आत्म कीर्तन —

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम ।
ज्ञाता द्रष्टा आतमराम !! टेक ॥

(१)

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ रागवितान ॥

(२)

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित-शक्ति सुख ज्ञाननिधान ।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ॥

(३)

सुख-दुख दाता कोइ न आन, मोह राग रुष दुख की खान ।
निजको निज परको पर जान फिर दुखका नहिं लेश निदान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा रामविष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्यागि पहुँचूं निजधाम आकुलता का फिर क्या काम॥

(५)

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जगका करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, सहजानन्द रहूं अभिराम॥

नूतन प्रिंटिंग प्रेस
सेवका बाजार, आगरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मप्रेमी बंधुवों ! यदि आप सरल उपायों से अध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान व शान्ति चाहते हैं तो अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहरजी वर्णी सहजानन्दजी महाराजके रचितग्रन्थों व प्रवचन ग्रन्थ का स्वाध्याय अवश्य कीजिए।

इन समस्त ग्रन्थोंका नाम वर्णी सेट है जो अध्यात्मग्रन्थ सेट, अध्यात्मप्रवचन सेट, विज्ञान सेट, व ट्रैक्ट सेट इन चार सेटोंमें विभक्त है। ये ग्रन्थ आपके पास न हों तो स्वाध्यायके अर्थ मँगा लेवें।

वर्णी सेट—समस्त ग्रन्थ अर्थात् चारों सेट मंगाने पर २०) प्रतिशत कमीशन होगा। विभक्त सेटों में से एक-दो या तीन सेट मंगाने पर १५) प्रतिशत कमीशन होगा।

अध्यात्मग्रन्थ सेट—इसमें आत्मसंबोधन सहजानन्दगीता, द्रव्यसंग्रह प्रश्नोत्तरी टीका, भागवतधर्म आदि करीब २५ ग्रन्थ हैं जिनकी करीब २८) न्यौछावर है।

अध्यात्मप्रवचन सेट—इसमें धर्मप्रवचन, प्रवचनसारप्रवचन १० भाग, समयसारप्रवचन ५ भाग, देवपूजाप्रवचन आदि ३५ ग्रन्थ हैं जिनकी न्यौछावर करीब ४८) है।

विज्ञान सेट—इसमें गुणस्थानदर्पण, जीवस्थानचर्चा, समस्थानसूत्र स्कन्ध, द्रव्यदृष्टप्रकाश आदि १७ ग्रन्थ हैं जिनकी न्यौछावर करीब १८) है।

ट्रैक्ट सेट—इसमें आत्मकीर्तन हिन्दी इंग्लिश आदि १६ ट्रैक्ट हैं जिनकी न्यौछावर २।) है।

पता—मंत्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीतपुरी सदर मेरठ (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi